आत्मा राम सनातन धर्म कॉलेज

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

राष्ट्रीय मल्याङ्कन एवं प्रत्यायन परिषद् **(NAAC)** ग्रेड- 'ए'
राष्ट्रीय ससंथागत रैंकिग फ्रेमवर्क **(NAAC)** 'सातवाँस्थान'

समन्वय

मार्च-2023

प्राचार्य का संदेश

किसी भी समाज और राष्ट्र को आगे ले जाने में शोध, अनुसंधान और नवाचार की बड़ी भूमिका होती है। भारतीय परंपरा में इसे 'गवेषणा' कहा गया है जिसके पीछे जिज्ञासा और प्रश्नाकुलता का मुख्य स्थान है। तथ्यान्वेषण और तथ्याशोधन इस गवेषणा के मुख्य अंग थे। अपने अनुसंधान से जो 'विशेष ज्ञान' अर्जित करते हैं वही वैज्ञानिक कहलाते हैं। 'ज्ञान की खोज में विधिवत गवेषणा' करना ही शोध कहलाता है। भारतीय सभ्यता में वैदिक काल से ही हमारे ऋषियों-मुनियों ने अपने अनुसंधान के द्वारा विश्व-मानवता की बेहतरी के लिए निरंतर शोध और अनुसंधान किए। हमारे ऋषियों और मुनियों ने 'ब्रह्म' को जानने और उनसे जुड़ने के लिए भी निरंतर अनुसंधान किया जिसके परिणामस्वरूप अनेकों भारतीय दर्शन विकसित हुए और जिसने विश्व-मानवता को अध्यात्मिक दुनिया से जोड़ा। ऋषि बादरायण का 'ब्रह्मसूत्र' का आरंभ ही होता है इस इस अद्भुत वाक्य से-
"अथातो ब्रह्म जिज्ञासा" अर्थात "आओ, अब हम परम सत्य की जिज्ञासा करें।" और इसी जिज्ञासा के कारण हमारे ऋषियों ने 'वसुधैव कुटुम्बकम' वैश्विक मानवता की परिकल्पना की- "सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद्दुःख भाग्भवेत्।"
जिसे आधुनिक विज्ञान कहा जाता है उसके विकास में भी बौधायन, चरक, कौमारभृत्य जीवक, सुश्रुत, आर्यभट, वराह मिहिर, ब्रह्मगुप्त, वाग्भट, नागार्जुन, भास्कराचार्य आदि जैसे भारतीय वैज्ञानिकों के अनुसंधानों की मुख्य भूमिका रही है। यह अलग बात है कि औपनिवेशिक काल में इस तथ्य को मिटाने का भरपूर प्रयास किया गया। आचार्य कणाद परमाणु संरचना पर सर्वप्रथम प्रकाश डालने वाले भारतीय महापुरूष माने जाते हैं, क्योंकि सबसे पहले उन्होंने ही बताया था कि पदार्थ अत्यन्त सूक्ष्म कणों से बना हुआ है। उन्होंने इन सूक्ष्म कणों को परमाणु नाम दिया। बाद में डॉल्टन ने परमाणु (एटम) का सिद्धांत प्रस्तुत किया। महर्षि कणाद का कहना था– "यदि किसी पदार्थ को बार-बार विभाजित किया जाए और उसका उस समय तक विभाजन होता रहे, जब तक वह आगे विभाजित न हो सके, तो इस सूक्ष्म कण को परमाणु कहते हैं। परमाणु स्वतंत्र रूप से नहीं रह सकते। परमाणु का विनाश कर पाना भी सम्भव नहीं हैं।" आधुनिक शोध के तहत बोधपूर्वक प्रयत्न से तथ्यों का संकलन कर सूक्ष्मग्राही एवं विवेचक बुद्धि से उसका अवलोकन-विश्लेषण करके नए तथ्यों या सिद्धांतों का उद्घाटन किया जाता है। महाविद्यालय शोध, अनुसंधान और नवाचार का आरंभिक मंच होता है। महाविद्यालय में विद्यार्थी अलग-अलग अनुशासनों से जुड़कर शोध और नवाचार से जुड़ते हैं, जिसमें अध्यापकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। समन्वय का यह नौ वाँ अंक पूर्णतः शोध आधारित निकल रहा है, यह देखकर प्रसन्नता हो रही है।

- प्रो. ज्ञानतोष कुमार झा

इस अंक में

संपादकीय

02 : शोध/अनुसंधान पर विभिन्न विचारकों के मत : अंजली भंडारी

आलेख

04 : आज़ादी के बाद का भारत और रघुवीर सहाय की कविता : शशिकांत कुमार

11 : आज़ाद भारत की परिकल्पना और दिनकर का काव्य रश्मिरथी : तनु पठाक

15 : पद्मावत में भारत की परिकल्पना : विद्या सिंह

16 : ज्ञान और अज्ञान : अर्थ, परिभाषा और परिकल्पना : गार्गी प्रखर

22 : कंप्यूटर ग्राफिक्स एवं वर्चुअल रिएलिटी : एक संक्षिप्त परिचय : अंबुज प्रताप सिंह

25 : फेक न्यूज़ , सोशल मीडिया और आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस : सिद्धार्थ मौर्य

28 : जाति एवं वर्ण व्यवस्था का यथार्थ : मुकुल शर्मा

34 : नूरजहां की प्रशासनिक दक्षता : अभिषेक गुप्ता

सम्पादकीय

शोध/अनुसंधान पर विभिन्न विचारकों के मत

शोध, अनुसंधान, नवाचार अथवा रिसर्च की दुनिया बहुत विस्तृत और बड़ी है। हम चाहे विज्ञान पढ़ें, समाज विज्ञान अथवा साहित्य, हर क्षेत्र में शोध और अनुसंधान की पर्याप्त संभावनाएं हैं। यहाँ शोध के सन्दर्भ में प्रस्तुत है कुछ प्रसिद्ध विद्वानों की परिभाषाएँ:-

अर्ल रॉबर्ट बब्बी : “अनुसंधान देखी गई घटना का वर्णन, व्याख्या, भविष्यवाणी और नियंत्रण करने के लिए एक व्यवस्थित जांच है। अनुसंधान में आगमनात्मक और निगमनात्मक विधियाँ शामिल हैं।”

पेटन : “अनुसंधान एक व्यवस्थित, औपचारिक, कठोर और सटीक प्रक्रिया है जिसका उपयोग समस्याओं का समाधान प्राप्त करने या नए तथ्यों और संबंधों की खोज और व्याख्या करने के लिए किया जाता है।”

वाल्ट्ज और बंसेल : “अनुसंधान एक व्यवस्थित, औपचारिक, कठोर और सटीक प्रक्रिया है जो समस्याओं का समाधान प्राप्त करने या नए तथ्यों और संबंधों की खोज और व्याख्या करने के लिए नियोजित है। ”

करलिंगर : “वैज्ञानिक अनुसंधान प्राकृतिक घटनाओं के बीच अनुमानित संबंधों के बारे में काल्पनिक प्रस्तावों की व्यवस्थित, नियंत्रित, अनुभवजन्य और महत्वपूर्ण जांच है”

लुण्डबर्ग : "अनुसंधान प्रेक्षित आँकड़ों का संभावित वर्गीकरण, सामान्यीकरण तथा सत्यापन करने के लिए पर्याप्त रूप से वस्तुनिष्ठ एवं व्यवस्थित पद्धति है।"

मैनहेम : "अनुसंधान किसी विशिष्ट विषय वस्तु की सावधानीपूर्वक, मेहनती और संपूर्ण जाँच है, जिसका उद्देश्य मानव जाति के ज्ञान की उन्नति करना है। "

मौली : “अनुसंधान आंकड़ों के नियोजित और व्यवस्थित संग्रह, विश्लेषण और व्याख्या के माध्यम से समस्याओं के भरोसेमंद समाधान पर पहुंचने की प्रक्रिया है।”

क्लिफर्ड वुडी : “अनुसंधान तथ्यों या सिद्धांतों की खोज में एक सावधानीपूर्वक पूछताछ या परीक्षा है, कुछ पता लगाने के लिए एक मेहनती जांच। ”

क्रेसवेल : “शोध किसी विषय या मुद्दे के बारे में हमारी समझ बढ़ाने के लिए जानकारी एकत्र करने और उसका विश्लेषण करने के लिए उपयोग किए जाने वाले कदमों की एक प्रक्रिया है। इसमें तीन चरण होते हैं: प्रश्न पूछें, प्रश्न का उत्तर देने के लिए डेटा एकत्र करें, और उत्तर प्रस्तुत करें प्रश्न का उत्तर देने के लिए डेटा एकत्र करें, और प्रश्न का उत्तर प्रस्तुत करें ।”

जॉन डब्ल्यू 'बेस्ट' : "अनुसंधान एक व्यवस्थित और वस्तुनिष्ठ विश्लेषण और नियंत्रित अवलोकनों की रिकॉर्डिंग है जो सामान्यीकरण, सिद्धांतों, सिद्धांतों और अवधारणाओं के विकास की ओर ले जा सकता है, जिसके परिणामस्वरूप घटनाओं को देखने और संभवतः अंतिम नियंत्रण के लिए भविष्यवाणी की जा सकती है। "

क्लार्क और क्लार्क : "अनुसंधान ज्ञान के किसी क्षेत्र में पहचाने जाने योग्य समस्या के संबंध में वैध तथ्यों को प्राप्त करने, निष्कर्ष निकालने और स्थापित सिद्धांतों के लिए एक सावधानीपूर्वक, व्यवस्थित और वस्तुनिष्ठ जांच है।"

कॉरिन : "अनुसंधान को सत्य की तलाश करने वाली गतिविधि के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो दुनिया का वर्णन या व्याख्या करने के उद्देश्य से ज्ञान में योगदान देता है "

कोठारी : "अनुसंधान अध्ययन, अवलोकन, तुलना और प्रयोग की सहायता से विश्वास की खोज है, किसी समस्या का समाधान खोजने के उद्देश्य और व्यवस्थित पद्धति के माध्यम से ज्ञान की खोज है।"

सीसी क्रॉफर्ड : "अनुसंधान केवल एक व्यवस्थित और किसी समस्या का अधिक पर्याप्त समाधान प्राप्त करने के लिए सोचने की परिष्कृत तकनीक, विशेष उपकरणों, उपकरणों और प्रक्रियाओं को नियोजित करना है।"

लीडी : "अनुसंधान एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम व्यवस्थित रूप से खोजने का प्रयास करते हैं, और इसके साथ। प्रत्यक्ष तथ्य का समर्थन, किसी प्रश्न या संकल्प का उत्तर ,एक समस्या का उत्तर।"

The concise Oxford Dictionary : "किसी विषय के वैज्ञानिक अध्ययन या आलोचनात्मक जाँच के द्वारा नए या पुराने तथ्यों आदि को खोजने का प्रयास।"

Mouley : "अनुसंधान आंकड़ों के नियोजित और व्यवस्थित संग्रह, विश्लेषण और व्याख्या के माध्यम से समस्याओं के भरोसेमंद समाधान पर पहुंचने की प्रक्रिया है ।"

इस पत्रिका को आकार देने का सारा श्रेय हमारे दूरदर्शी प्राचार्य प्रोफ़ेसर ज्ञानातोष कुमार झा जी को जाता है। उन्हीं की प्रेरणा से इस अंक की सारी सामग्री शोध आधारित रखी गई है। इस अंक के सारे रचनाकारों द्वारा शोध आलेख लिखने का यह पहला प्रयास है। हम अपने अध्यापकों के बहुमूल्य सलाह के लिए उनके प्रति आभारी हैं।

-अंजली भंडारी

आज़ादी के बाद का भारत और रघुवीर सहाय की कविता

शशिकांत कुमार

(द्वितीय वर्ष, हिन्दी विशेष)

बीसवीं सदी के प्रारंभ से हीं भारतीय जनता ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संगठित होने लगी थी। 1915 में जब गांधी जी अफ्रीका से भारत लौटे तो स्वतंत्रता आंदोलन को एक नया आयाम मिला। स्वतंत्रता की चाह समाज में हाशिए पर खड़े मजदूर, किसान और तथाकथित अछूत भी अब अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर रहे थे और उसके लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने की बातें केवल कुछ लोगों तक सीमित नहीं रह गई थी । इस आंदोलन की तीव्रता धीरे-धीरे बढ़ती चली गई और यही बढ़ती हुई तीव्रता आजादी के स्वप्न को और गहरी, और भी हसीन करती जा रही थी। जनता में यह विश्वास जागृत हो गया था कि उनके सभी समस्याओं का एकमात्र समाधान है आजादी।

लेकिन आजादी के तुरंत बाद भारत का विभाजन और उस विभाजन के बाद जो सांप्रदायिकता फैली, सामूहिक कत्ल हुए, महिलाओं के साथ दुष्कर्म हुए; इस पहली घटना से हीं आजादी से पूर्व बना स्वप्न का महल यथार्थ की एक चोट से धराशायी हो गया। किंतु अभी भी जनता उत्साहित थी ,क्योंकि स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान नेताओं द्वारा किए गए वादे जो उन्हे यह आश्वासन दे रहे थे कि लोकतंत्र का राज होगा, गरीबी– भुखमरी दूर होगी, भ्रष्टाचार बंद होगा ,सबको रोजगार मिलेगा और देश विकास की तरफ अग्रसर होगा। उनके पूरे होने का वक्त आ चुका था। आज़ादी के पश्चात देश में लोकतंत्र की बहाली हुई, संविधान की रचना हुई और संविधान के द्वारा ही देश में शासन चलाने की बात की गई। विभिन्न तरह की परियोजनाओं को लागू किया गया जिसमें आम जनता को रोजगार के अवसर मिले। बहुउद्देशीय परियोजना उनमें स सबसे अग्रणी रही।

लेकिन शासन व्यवस्था में कुछ ज्यादा महत्वपूर्ण बदलाव नहीं देखे गए। जैसा कि रजनी पाम दत्त कहते हैं “साम्राज्यवाद के पुराने शासन तंत्र को ज्यों का त्यों अपना लिया गया था । वही पुरानी नौकरशाही थी, वही अदालतें थी , वहीं पुलिस थी और दमन के तरीके भी वही थे।” **1** विकास के जिस मॉडल पर काम किया जा रहा था वह जनता को आकर्षित तो कर रही थी लेकिन कुछ ही वर्षों में यह स्पष्ट हो गया कि “स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात साम्राज्यवादी , अर्धसामंती और पूंजीवादी सत्ता की राजनीति ने देश की जनता को अपनी जमीन और परिवेश से काटकर अपने ही घर में शरणार्थी बनने को मजबूर कर दिया।” **2**

इन घटनाओं के दबाव में पुराने मूल्यों का टूटना तथा नई मन: स्थिति की निर्मिति स्वाभाविक ही थी। चूकि साहित्य कभी समाज से अछूता नहीं रह सकता है, अतः तत्कालीन समय में साहित्यकारों का ऐसा समूह तैयार हुआ जिसने बिना किसी लाग लपेट के यथार्थ को अपनी रचनाओं में प्रतिबिंबित किया। ज्ञातव्य है कि कविता सदैव से ही मानवीय संवेदना को अधिक प्रभावित करती रही है । उन कवियों में सबसे अग्रणी बाबा नागार्जुन थे, इन्होंने राजनितिक व्यंग से लेकर आम जनता की समस्याओं को अपनी कविता का विषय बनाया। इसी सुदीर्घ परंपरा के मूर्धन्य कवि हुए रघुवीर सहाय (1929–1990)। रघुवीर सहाय भी उसी पीढ़ी से ताल्लुक रखते थे जो स्वतंत्रता के बाद काफी सारी आकांक्षाओं के साथ पली बढ़ी थी। सहाय जी उन्हीं अपूर्ण आकांक्षाओं को अपनी कविता का मुख्य विषय बनाते हैं।

कवि सजग सचेत और युगदृष्टा होता है। जब कोई कवि अपनी कविता में अपने देश और समाज को रचता है तो वह सिर्फ वही नहीं बताता जो राजनीतिक नारों में बताया जाता है । वह देखने की कोशिश करता है कि वास्तविकता क्या है? आजादी के पश्चात विकास का जो घटाटोप बन रहा था, रघुवीर सहाय उसके अंतर्विरोध को पकड़ने वाले सजग कवि हैं। जैसा कि रामस्वरूप चतुर्वेदी ने कहा है कि “मनुष्य जीवन की नियति को उसके समूचे विस्तार में देखना और प्रासंगिक बनाए रखना रघुवीर सहाय के कवि–कर्म का केंद्रीय तत्व है।**3** इसी संदर्भ में रघुवीर सहाय ने अपनी कविताओं के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया है कि आजादी के पश्चात हमने भारत के जिस रूप का स्वप्न देखा था; उसके लिए हम कुछ निर्मित कर रहे हैं या नहीं । वह चाहे राजनेता हो या सामान्य नागरिक ,एक कवि की निगाह में यह बात सब पर लागू होती है । वह देखता है कि कहीं कथनी और करनी में अंतर तो नहीं है । आधुनिक हिन्दी कविता के सशक्त हस्ताक्षर कवि रघुवीर सहाय की कविताओं में लोकतंत्र का बदलता स्वरूप, महिलाओं की समस्या, प्रतिदिन बढ़ती जा रही गुंडागर्दी, जनता का मात्र एक मतदाता के रुप में सीमित हो जाना तथा और भी ऐसी समस्याएं जो आम जन का , हाशिए पर खड़े समाज का प्रतिनिधित्व करती है , यह सब विषय इन्हे ज्यादा आकर्षित करते हैं। इनके काव्य कौशल का मूल्यांकन करते हुए आचार्य त्रिपाठी जी ने कहा है कि “सामान्य से सामान्य एवं परिचित से परिचित स्थिति में कुछ ऐसा देख लेना कि वह पहली बार मार्मिक लगे रघुवीर सहाय की अचूक क्षमता है। “(विश्वनाथ त्रिपाठी: हिंदी साहित्य का सरल इतिहास, पृष्ठ सं•-154)। उनकी कविताओं के माध्यम से यह और भी ज्यादा स्पष्ट होगा।

रघुवीर सहाय की प्रतिनिधि कविताओं में से एक ‘रामदास’ शिथिल पड़े मानवीय भाव भूमी में तीव्र हलचल पैदा करती है । बीच चौराहे पर रामदास की हत्या होती है। शायद कवि यह बताना चाहते हैं कि आज़ादी के पश्चात जिस शासन व्यवस्था में सबकी रक्षा की ज़िम्मेदारी लोकतंत्र के द्वारा तय की गई थी, यह उस लोकतंत्र की हत्या है । इस कविता के सन्दर्भ में आचार्य विश्वनाथ त्रिपाठी जी ने कहा है कि “रामदास जैसी संत्रास पैदा करनेवाली कविताएं हिंदी में कम ही लिखी गई होंगी।”**4**

“निकल गली से तब हत्यारा

आया उसने नाम पुकारा

हाथ तौलकर चाकू मारा

छूटा लहू का फव्वारा।"

एक ऐसा निरीह, अति समान्य नागरिक जिसके बारे में स्वाधीनता आंदोलन के दौर में बहुत दावे किए गए थे। उन सामान्य लोगों की रक्षा में न तो आजाद भारत का सामाजिक बोध काम करता है न वह व्यवस्था काम करती है जिससे वह निर्भीक जीवन जी सके। अरस्तु ने बहुत पहले कहा था मनुष्य में केवल दो भाव मुख्य हैं —भय और करुणा। भय जो स्वयं के लिए होता है और करुणा जो दूसरों के प्रति हमारे मन में उभरती है और यही करुणा कार्य या प्रतिक्रिया में परिवर्तित होती है, जिस प्रकार बीच चौराहे पर इतने लोगों के सामने रामदास को मारा गया शायद कवि यह दिखाना चाहते हैं कि जनता में अब करुणा का लेस मात्र भी नहीं बचा है । जनता अब केवल भीड़ बन कर रह गई है जो देख तो सकती है पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दे सकती।

जब इसी आजाद भारत में रामदास जैसे सामान्य लोगों की रक्षा नहीं हो पाती तो कवि के मन में यह प्रश्न उठता है कि कहीं यह देश अधिनायकवाद का शिकार तो नहीं हो गया? और इसी संशय को उजागर करती है इनकी कविता 'अधिनायक' जो अपने में मग्न राजनेताओं और उनकी राजशाही प्रवृति पर प्रश्न उठाती है और हरचरना जैसे सामान्य नागरिक की विडंबना सामने रखती है।

" राष्ट्रगीत में भला कौन वह

भारत –भाग्य विधाता है

फटा सुथन्ना पहने जिसका

गुन हरचरना गाता है"

आजादी के पश्चात लोकतंत्र का जो रूप जनता के समक्ष रखा गया उसमें प्रत्येक जनता की भागीदारी एक मतदाता के रूप में सुनिश्चित हुई। यह प्रचार किया गया कि लोकतंत्र का अर्थ है जनता का शासन लेकिन यह विडंबना की बात है कि जनता के शासन में भी जनता की समस्याओं को दरकिनार रखा गया और किस प्रकार एक व्यक्ति राजनेताओं के नजरों में मतदाता मात्र बनकर रह गया है। भले हीं उसकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति दयनीय हो पर चुनाव के समय संविधान के नजर में वह उन्हीं संपन्न व्यक्तियों के बराबर है जो उसके साथ पंक्ति में खड़े होकर मत का दान करेंगे।

"जब शाम होती है तब खत्म होता है मेरा काम

जब काम खत्म होता है तब शाम खत्म होती है

रात तक दम तोड़ देता है परिवार

मेरा नहीं एक और मतदाता का संसार

रोज कम खाते-खाते उबकर"

मतदाता का संसार सीमित है और उस सीमित संसार में वह अपनी जिंदगी को; बस काट रहा है ,जी नहीं रहा! दिन भर काम करने के बावजूद वह इतना धन नहीं कमा पाता कि शाम को घर आने के बाद अपने परिवार का पेट भर सके। स्वतंत्र भारत में यह परिकल्पना बेहद भयावह है । यह वो मतदाता है जो अपने रोजमर्रा के जीवन से थक चुका है,दिन भर काम करने के बाद भी उसे दो जून की रोटी नसीब नहीं है । पर उसे संविधान द्वारा यह अधिकर प्राप्त है कि अपने रोजगार और सुविधाओं हेतु आवाज उठा सकता है।

अपने समस्याओं को सरकार के समक्ष रख सकता है लेकिन वह मौन है, कवि की दृष्टि इस पर जाती है और वह उसके भय को अपनी कविता में प्रतिबिंबित करते हुए कहता है—

" मैं अभी आया हूं सारा देश घूम कर

पर उसका वर्णन दरबार में करूंगा नहीं

राजा ने जनता को बरसों से देखा नहीं

यह राजा जनता की कमजोरियां ना जान सके इसलिए मैं

जनता के क्लेश का वर्णन करूंगा नहीं इस दरबार में "

व्यंग्य शैली में लिखी गई यह कविता लोकतंत्र के स्वरूप पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करती है। सत्ता में बैठे लोगों को यह डर है कि कहीं अगर पूरी जनता को इस वास्तविक स्थिति का पता लग गया तो उनका कुर्सी पर बने रह पाना मुश्किल है ।अतः उनकी आवाज को दबा देना ही वे उचित समझते हैं और इसके लिए वे साम-दाम-दंड-भेद किसी भी तरीके को अपना सकते हैं।

आजादी के बाद क्रमश: जो भारत बन रहा था कवि उस पर प्रश्न खड़ा करता है। जनता 90 साल की लड़ाई लड़कर अंग्रेजों के खिलाफ हर तरह का संघर्ष करके आजादी पाती है, स्वाधीनता पाती है और स्वाधीनता के मूल्य को संविधान के माध्यम से भारतीय राष्ट्र का श्रेष्ठ मूल्य बताया जाता है। राष्ट्र की संप्रभुता के साथ व्यक्ति के संप्रभुता की रक्षा की गारंटी दी जाती है; उसी देश में एक 'स्वाधीन' व्यक्ति से सब घबराते हैं। एक स्वाधीन व्यक्ति शक की निगाह से देखा जाता है और वह चारों तरफ से प्रश्न के घेरे में क्यों खड़ा क्र दिया जाता है ? सभी के द्वारा उस व्यक्ति को अकेला क्यों कर दिया जाता है? क्या आजाद भारत में हम स्वाधीनता के मूल्य की रक्षा कर पा रहे हैं ? कवि के मन में यह प्रश्न उठता है —

हो सकता है कि कोई मेरी कविता आखरी हो जाए

मैं मुक्त हो जाऊं

ढोंग के ढोल जो डुंड बजाते हैं उस हाहाकार में

यह मेरा अट्टहास ज्यादा देर तक गूंजे खो जाने के पहले

मेरे सो जाने के पहले

उलझन समाज की वैसी ही बनी रहे

ऐसी ही स्थितियों में 90 वर्ष की लड़ाई के बाद जो सबसे बड़ा मूल्य हमने प्राप्त किया था; स्वाधीन व्यक्ति ,स्वाधीन चेतना उस पर प्रश्नचिन्ह खड़ा होता है। स्वाधीन जीवन जीने वाला व्यक्ति ही देश के लिए जीता है, देश के निर्माण में अपनी सक्रिय भूमिका निभाता है । कवि इस आजाद एवं लोकतांत्रिक भारत में राजशाही को नहीं मानता है, लेकिन जो अंग्रेजों से पहले अंग्रेजों के समर्थक थे वही फिर से सत्ता में आकर बैठ गए हैं, इसलिए राजशाही जिंदा है। जिस प्रकार अंग्रेजों के अधिकारी रोब दाब में रहते थे और जिससे जनता के भीतर एक भय पैदा होता था, वही भय आज भी अपने प्रतिनिधियों को लेकर है तो राजशाही जिंदा है ।कवि यह मानता है कि ये भारत की संकल्पना नही थी।रघुवीर सहाय ने 'दिनमान' के लिए लिखे गए अपने एक लेख में लोकतंत्र के बदलते स्वरूप को देखते हुए कहा है कि "लोकतंत्र के सारे बाहरी उपकरण— न्यायपालिका, विधायिका आदि —बने रहने दिए जाएँ, केवल राजनीतिक व्यवस्था का

रूप राजा और प्रजा संबंध के अनुसार बनता चला जाए तो एक नए ढंग का अलोकतांत्रिक लोकतंत्र बन सकता है। इसमें सब मनुष्य केवल वोट के लिए बराबर बराबर होंगे और बातों में वह हजारों साल पुरानी सामाजिक व्यवस्था के अनुसार आज फिर से बांटकर रखे जाएंगे।" **5**

रघुवीर सहाय स्वयं एक पत्रकार थे और समाज के निर्माण में पत्रकारिता की भूमिका को बखूबी जानते थे। पत्रकारिता के कारण उन्हें समाज को बेहद नजदीक से देखने का अवसर मिला। मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तंभ होता है और इस नाते यह दायित्व बनता है कि वह आम जन तक सही खबरों को संप्रेषित करे। यथार्थ को ज्यों का त्यों दिखाए , उसमें न कुछ कम हो न कुछ ज्यादा। किस प्रकार मीडिया भी सरकारी तंत्र का हिस्सा बन गई है कवि को यह भारी संकट का विषय लगता है। कविता 'टेलीविजन' में कवि मन की यह वेदना विस्फोट के साथ बाहर आती है —

तब से मैंने समझ लिया है आकाशवाणी में बन ठन

बैठे हैं जो खबरों वाले वे सब हैं जान के दुश्मन

उनको शक था दिखला देते अगर कहीं छत्तीस इंसान

साधारण जन अपने-अपने लड़कों को लेता पहचान

ऐसी सी दुर्भावना लिए है जन के प्रति जो टेलीविजन

नाम दूरदर्शन है उसका काम किंतु है दुर्दशन

मीडिया का यह विकृत स्वरुप कवि के लिए चिंता का विषय है। लेकिन 'रघुवीर सहाय का वार प्राय: दो तरफा होता है। उन्हे जनता से गहरा प्यार तो अवश्य है , किंतु वे उसकी कमजोरियों के लिए उसे बख्शते नहीं हैं। शासकों के साथ–साथ आवश्यकता पड़ने पर उसे भी निशाना बनाते हैं। एक तरफ उनका लक्ष्य शासक है तो दूसरी तरफ जनसाधारण भी, जो विरोध का रास्ता छोड़ रहा है।'**6**

"एक मेरी मुश्किल है जनता

जिससे मुझे नफरत है सच्ची और निस्संग

जिस पर कि मेरा क्रोध बार–बार न्योछावर होता है ...."

इसी प्रकार एक दूसरी कविता में रघुवीर सहाय निष्क्रिय समाज की तीखी आलोचना करते हुए कहते हैं कि —

"हम अपना भूगोल ही भूल गए हैं

हर हत्या हमसे कुछ दूर हुई दिखती है

जब कि वह हमारे बहुत पास में हुई है...."

कवि हृदय अपनी कविताओं के माध्यम से हमेशा समाज की संवेदनाएं जगाने की कोशिश करता है। समाज में हो रहे विभिन्न घटनाओं द्वारा सामान्य जन को अवगत करा कर उन्हें सचेत करता है कि हम निष्क्रिय नहीं बैठ सकते। विडंबना की बात तो यह है कि अगर वह घटना अपने घर में हो जाए तो लोग बहुत परेशान हो जाते है। शायद यह वही बोध है जो बचपन में सिखाया जाता है; अपने काम से काम रखो,

दूसरों से क्या मतलब ! बात सार्वजनिक स्थलों की हो या घर के अंदर की, रघुवीर सहाय हर जगह इस निष्क्रियता की आलोचना करते हैं। और बात अगर स्त्रियों की स्तिथि को लेकर हो तो उनकी कविताओं के मुख्य केंद्र में राजनीति के साथ–साथ स्त्रियों की समस्याएं भी रही हैं । स्त्री शिक्षा का प्रश्न हो या स्त्री की सामाजिक स्तिथि का सहाय जी ने एक व्यंग्यात्म शैली जनमानस के समक्ष रखी है।

संविधान कहता है कि पुरुष हो या स्त्री सभी बराबर है और किसी भी आधार पर स्त्रियों के साथ भेदभाव नहीं होनी चाहिए। सबको बराबर का मौका दिया जाना चाहिए। लेकिन हमारे समाज ने स्त्री को कौन सी जगह दी थी? सहाय जी ने अपनी कविताओं में स्त्रियों को विशेष महत्व दिया है जो उनकी दृष्टि में उपेक्षितों की प्रतीक है। वह व्यंग के माध्यम से भी आजाद भारत में स्त्रियों की दयनीय स्तिथि को उभार कर रखते हैं। 'पढ़िए गीता ' स्त्रियों की सामाजिक स्तिथि के संदर्भ में प्रतिनिधि कविता है —

पढ़िए गीता

बनिए सीता फिर इन सबमें लगा पलीता

किसी मूर्ख की हो परिणीता

निज घरबार बसाइए।

होय कंटीली

आँखें गीली

लकड़ी सीली , तबियत ढीली

घर की सबसे बड़ी पतीली

भरकर भात पसाइए।

सहाय जी ने शब्दों के जाल को कुछ इस प्रकार बुना है कि कविता का प्रवाह टूटता नहीं है और गहरी बात कह जाते हैं । देशज शब्दों का सार्थक उपयोग द्वारा व्यंग की तीव्रता काफ़ी बढ़ गई है।किस प्रकार धर्म की आड़ मे स्त्रियों को सीमित रखा जाता है। और घर के चारदीवारी में ही उनकी जीवन लीला समाप्त हो जाती है। और जब स्त्रियां घर से बाहर निकलती हैं तो किस प्रकार उनसे भेदभाव किया जाता है, रघुवीर सहाय की प्रतिनिधि कविताओं में से एक 'चढ़ती स्त्री' इसका सबसे मर्मस्पर्शी उदाहरण है। **7**

बच्चा गोद में/ चलती बस में/चढ़ती स्त्री/ और मुझमें कुछ दूर तक घिसटता जाता हुआ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि रघुवीर सहाय ने न सिर्फ विकास के अंतर्विरोधों को पकड़ा बल्कि समाज के संवेदनशील मुद्दों को भी प्रखरता से उठाया। लोकतंत्र, स्वाधीन व्यक्ति, करुणा, नारी, मीडिया आदि अन्य विषयों में अपनी कलम का जादू दिखाया। इनकी लगभग सारी कविताएं आज़ाद भारत की संकल्पना का आलोचनात्मक व्याख्या प्रस्तुत करती है और इस आलोचना का अर्थ निंदा करना या विरोध करना नही है।

इस आलोचना का अर्थ है कि जिस भारत का स्वप्न हमने देखा और दिखाया था उस भारत के लिए ही जीना है , वैसा ही भारत बनाना है। इस स्वपन की पूर्ति हेतु हर नागरिक को अपने जीवन में निरंतर कार्य करते हुए मरने–मारने के लिए तैयार रहना चाहिए। मारना , उन मूल्यों की रक्षा के लिए और मरना, उन मूल्यों को बनाने के लिए।

आज हम अधिक काम करना चाहतें है

जीना चाहते हैं

मरना और मारना चाहते हैं।

सहायक एवम् सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रजनी पामदत्त: भारत वर्तमान और भविष्य, पृष्ठ सं•287
2. सुरेश शर्मा : रघुवीर सहाय का कवि कर्म, पृष्ठ संख्या –06
3. रामस्वरूप चतुर्वेदी : हिंदी और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, 2021
4. विश्वनाथ त्रिपाठी : हिंदी साहित्य का सरल इतिहास, ओरियंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड।
5. संपादक – कृष्ण कुमार : रघुवीर सहाय संचयिता, राजकमल प्रकाशन, 2003
6. संपादक – सुरेश शर्मा : प्रतिनिधि कविताएं, राजकमल प्रकाशन, 2006, नई दिल्ली
7. नंदकिशोर नवल का रघुवीर सहाय पर लेख

आज़ाद भारत की परिकल्पना और दिनकर का काव्य रश्मिरथी

तनु पाठक

(प्रथम वर्ष, हिन्दी विशेष)

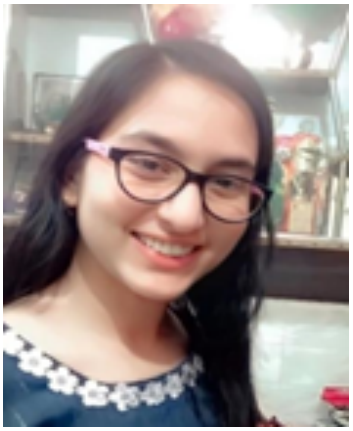

भारत ने बहुत लंबे संघर्ष के बाद अमूल्य स्वतंत्रता को प्राप्त किया। पिछले 75 वर्षों से भारत पूरी आत्मनिर्भरता के साथ गतिमान हो कर अपने प्रगति पथ पर अग्रसर है। भारत ने हर क्षेत्र में बहुत तेजी से विकास किया है। स्वतंत्रता के बाद से यह अपने शिक्षा के क्षेत्र में लगातार विकास कर रहा है।इसकी वर्तमान साक्षरता दर 74.04% है और महिलाओं की साक्षरता दर 65.46% है। महिला राजनीतिज्ञों की सबसे अधिक संख्या भारत में है और यह दुनिया का ऐसा पहला देश बना जिसकी प्रमुख एक महिला रहीं – श्रीमति इंदिरा गांधी। यह एशिया की तीसरी और विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।यह दुनिया का एक मात्र ऐसा देश है जिसने अपनी स्वतंत्रता के बाद से ही अपने प्रत्येक नागरिक को मतदान का अधिकार दिया था। स्वतंत्रता के तुरंत बाद जब 560 रियासतों ने भारत संघ के अधीन आना स्वीकार किया तो दुनिया का सबसे बड़ा विलय और अधिग्रहण हुआ। आज हम रक्षा तकनीक और अंतरिक्ष तकनीक के क्षेत्र के सबसे उन्नत राष्ट्रों में से एक हैं। वर्ष 1975 में भारत ने पहले अंतरिक्ष उपग्रह का डिजाइन 'आर्यभट्ट' तैयार किया था। इसके अलावा मंगल ग्रह की कक्षा में पहुंचने वाला यह दुनिया का चौथा देश और अपने पहले ही प्रयास में सफल रहने वाला पहला देश बन चुका है। भारत ने अपने पहले ही प्रयास में चंद्रमा की पड़ताल के लिए भेजे जाने वाले चंद्रयान को लॉन्च करने में सफलता अर्जित की और चंद्रमा की मिट्टी में पानी की मौजूदगी की खोज भी की । धर्मों और संस्कृतियों की ऐसी विविधता के बावजूद हम एक राष्ट्र हैं और हर एक बीतते दिन के साथ एकता की यह भावना और मजबूत होती जाती है।

भारत के राष्ट्रीय नायकों ने जिस भारत की परिकल्पना की थी, भारत बहुत हद तक उस पर खरा उतरा। उसी परिकल्पना के आधार पर भारतीय संविधान की संरचना की गई, जिसका मूल आधार संप्रभुता,

धर्मनिरपेक्षता,लोकतंत्र, न्याय, स्वतंत्रता और समानता को माना गया। ये सभी आदर्श संविधान में, सरकारी कागजों में और नेताओं के भाषण में तो पूर्ण रूप से देखने को मिले परंतु वास्तविक तौर पर ये बदलाव समाज की सोच में नहीं उतरा। भारतीय संस्कृति की विविधता ने मनो में विभाजन का रूप ले लिया। अलग-अलग भाषा बोलने वाले अपनी भाषा को प्राथमिकता दिलाना चाहते थे। भारत में विभाजन के बाद हिन्दू और मुसलामानों में फुट पड़ चुकी थी जिसका परिणाम हमे आज भी देखने को मिलता है। धर्म और जाति मात्र राजनीति के मुद्दे बन कर रह गए । भारतीय समाज मानवता के नाम पर एक होने की जगह धर्म और जाति के नाम पर एक दूसरे से लड़ते रहें । स्वतन्त्रता से पहले भी कई भक्त कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से एकता का संदेश देने का प्रयास किया। इसका उदाहरण तुलसीदास द्वारा रचित ' कवितावली ' के उत्तर कांड की उन पंक्तियों में देखने को मिलता है जिनमें वे कहते हैं -

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूत कहौ, जोलहा कहौ कोऊ।

का की बेटी सों बेटा न ब्याहब, काहू की जाति बिगार न सोऊ॥

तुलसी सरनाम गुलाम है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।

माँगिके खैबो मसीत को साइबो लैबे को एक न देवे को दोऊ॥[१]

इन पंक्तियों के माध्यम से वो ये कहना चाहते हैं कि कोई उन्हे किसी भी जाति का समझे , उन्हें इस बात से फर्क़ नहीं पड़ता । उन्हें किसी की बेटी से अपने बेटे की शादी नहीं करवानी है । वह किसी की जाति नहीं बिगाड़ रहे हैं । वह मांग कर खा लेंगे , मस्जिद में सो लेंगे , वह सिर्फ राम नाम के दास हैं । उन्हें किसी धर्म या जाति से मतलब नहीं है ।

कबीर कहते हैं - ऊँचे कुल में जनमिया, करनी ऊँच न होय ।

सबरं कलस सुरा भरा, साधू निन्दा सोय ।।[२]

इन पंक्तियों से ये भाव स्पष्ट होता है कि ऊँचे कुल में जन्म लेने से व्यक्ति छोटा या बड़ा नहीं होता । कोई भी अपने कर्मों से ऊँचा बनता है। यदि किसी ऊँचे कुल में जन्म लेने वाले व्यक्ति के कर्म अनुचित है तो वह व्यक्ति कभी बड़ा और सम्मानित नहीं समझा जा सकता, परंतु यदि किसी पिछड़ी जाति के व्यक्ति के कर्म अच्छे हैं तो वो व्यक्ति भी सम्मानित होगा। वैसे ही जैसे सोने के प्याले में भी मदिरा पीने पर सज्जन उसकी निंदा ही करते हैं।

भक्त कवियों द्वारा किए गए इन सभी प्रयासों के बाद भी सामाजिक स्तर पर कोई बड़ा आंदोलन नहीं होने के कारण राजनीतिक सत्ता में भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ और धार्मिक रूढ़ियों की स्थिति भी वैसी ही बनी रही।परंतु धार्मिक एकता और समाज मे जागरुकता लाने का प्रयास हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल तक ही नहीं रुका, आधुनिक काल में भी कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से एकता का संदेश देते हुए जाति प्रथा का विरोध किया।

भारतेंदु हरिश्चंद्र कहते हैं "होय मनुष्यहि क्यों भये हम गुलाम ये भुप।" [३] अपने इस कथन से वे कहना चाहते हैं कि सभी मनुष्य एक समान है तो फिर वो राजा , हम गुलाम कैसे और क्यों हो गए । ये सभी असमानता मनुष्यो की बनाई हुई है । ये एक नए विचार का उदय करता है कि मनुष्य को किसी जाति या कुल के आधार पर नहीं उसकी योग्यता के आधार पर श्रेष्ठ माना जाना चाहिए । आजादी के बाद जिस भारत की कल्पना की गई थी, उसमे सभी समान थे परंतु ऐसा कपलना में तो था परंतु वास्तविकता ये नही थी।इसी अंतर को देखते हुए कई कवियों ने सामाजिक सच्चाई को देखते हुए कविताएं लिखी थी और इसी चेतना को सामने लाने का काम करती है दिनकर जी की रचना 'रश्मिरथी'।

रश्मिरथी में देखने को मिलता है कि किस प्रकार किसी विशेष जाति का होने के कारण समाज द्वारा किसी की योग्यता को अस्वीकार किया जाता है। रामधारी सिंह 'दिनकर' हिन्दी के प्रमुख लेखक, कवि व निबन्धकार थे। वे आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि के रूप में स्थापित हैं। 'दिनकर' स्वतन्त्रता पूर्व एक विद्रोही कवि के रूप में स्थापित हुए और स्वतन्त्रता के बाद 'राष्ट्रकवि' के नाम से जाने गये। वे छायावादोत्तर कवियों की पहली पीढ़ी के कवि थे। एक ओर उनकी कविताओ में विद्रोह, आक्रोश और क्रान्ति की पुकार है तो दूसरी ओर कोमल श्रृंगारिक

भावनाओं की अभिव्यक्ति है। इन्हीं दो प्रवृत्तियों का चरम उत्कर्ष हमें उनकी कुरुक्षेत्र और उर्वशी नामक कृतियों में मिलता है। उन्होंने सामाजिक, आर्थिक समानता और शोषण के खिलाफ कविताओं की रचना की। एक प्रगतिवादी और मानववादी कवि के रूप में उन्होंने ऐतिहासिक पात्रों और घटनाओं को ओजस्वी और प्रखर शब्दों का तानाबाना दिया।

दिनकर जी की रचना रश्मिरथी उनकी सर्वोत्तम रचनाओं में से एक है। कर्ण के जीवन संघर्ष को बताने वाली इस कृति का नाम "रश्मिरथी" दिनकर ने सर्वथा उचित रखा है। जिस प्रकार सूर्य अपनी रश्मि अर्थात किरणों के रथ पर बैठ कर चारों दिशाओं में अपना प्रकाश और सकारात्मक ऊर्जा का वितरण करता है उसी प्रकार 'कर्ण' अपनी वीरता और पराक्रम के रश्मि रथ पर बैठ कर जीवन भर धर्म के मार्ग पर चलता हुआ अपना तेज बिखेरता रहा। रश्मिरथी की रचना महाभारत की पृष्ठभूमि पर की गई है। दिनकर की इस संरचना की हर पंक्ति बहुत कुछ कहती है । इस विशाल कोष के मोती और उनमें विद्यमान दिनकर के विचारों की चमक किसी से छिपी नहीं है । रश्मिरथी के माध्यम से दिनकर जाति प्रथा पर भी चोट करते हैं।

रश्मिरथी के प्रथम सर्ग में दिनकर कहते है-

क्षत्रिय वही, भरी हो जिसमें निर्भयता की आग,

सबसे श्रेष्ठ वही ब्राह्मण है, हो जिसमें तप-त्याग।[४]

इन पंक्तियों में ये भाव देखने को मिलता है कि ब्राह्मण या क्षत्रिय कोई जन्म के आधार पर नहीं हो सकता यद्यपि कर्मों द्वारा कुल का निर्धारण होता है।

और जब दिनकर कहते है कि-

नहीं फूलते कुसुम मात्र राजाओं के उपवन में,

अमित बार खिलते वे पुर से दूर कुञ्ज-कानन में।

समझे कौन रहस्य ? प्रकृति का बड़ा अनोखा हाल,

गुदड़ी में रखती चुन-चुन कर बड़े कीमती लाल।[५]

ये कथन कर्ण के विषय में तो पूर्ण सत्य होते दिखाई देते ही हैं एवं हर योग्य व्यक्ति इसको और सत्य सिद्ध कर देता है कि तेजस्वी वीरों का पराक्रम किसी राजकुल या क्षत्रिय कुल से सम्बंधित होने के लिए बाध्य नहीं है। प्रकृति सदैव अपने अमूल्य रत्नों के साथ रहीं है और वीर हर पर्वत के बीच अपने संघर्ष का मार्ग स्वयं बना कर अपनी उन्नति की ओर चलते रहे है।

जाति पूछने वालों पर कड़ी चोट करते हुए दिनकर कहते है कि-

जाति-जाति रटते, जिनकी पूँजी केवल पाषंड,

मैं क्या जानूँ जाति ? जाति हैं ये मेरे भुजदंड।

'ऊपर सिर पर कनक-छत्र, भीतर काले-के-काले,

शरमाते हैं नहीं जगत् में जाति पूछनेवाले।[६]

जो मात्र जाति की बातें करते हैं ,वे अपने पाखंड का प्रदर्शन करते हैं । जाति पूछने वालों को लज्जा आनी चाहिए जो सर पर कनक छत्र रखे ऊँची उपाधियों पर बैठे है परंतु उनके मन कोयले के समान काले हैं ।

समाज में बड़े बने बैठे लोगों के अन्धकार पूर्ण धारणा पर प्रकाश डालते हुए दिनकर लिखते हैं-

जन्मे नहीं जगत् में अर्जुन! कोई प्रतिबल तेरा,

टँगा रहा है एक इसी पर ध्यान आज तक मेरा।

एकलव्य से लिया अँगूठा, कढ़ी न मुख से आह,

रखा चाहता हूँ निष्कंटक बेटा! तेरी राह। [७]

गुरु द्रोणाचार्य का अर्जुन से ये कहना कि उसकी राह निष्कंटक बनाने के लिए, उसे सर्व श्रेष्ठ बनाने के लिए उन्होंने एकलव्य का अंगूठा कटवाया, इस बात को सिद्ध कर देता है कि किस प्रकार ऊँचे पद पर बैठे लोग अपनी ही उन्नति करते हैं और योग्यता उनकी प्राथमिकता ना हो कर उनका निजी स्वार्थ, उनकी प्राथमिकता हो जाती है।

समाज की कुरीतियों के कारण दिनकर संपूर्ण समाज पर ये व्यंग करते है-

धँस जाये वह देश अतल में, गुण की जहाँ नहीं पहचान।

जाति-गोत्र के बल से ही आदर पाते हैं जहाँ सुजान।[८]

अवश्य ही जिस समाज में मनुष्य का स्तर उसकी योग्यता के आधार पर न होकर जाति और गोत्र के आधार पर होगा उस समाज को क्षीण होने में अधिक समय नहीं लगेगा।

दिनकर का यह महाकाव्य 'रश्मिरथी' भारतीय समाज को यह विचार करने के लिए बाध्य कर देता है कि हमारे समाज में कब तक ये कुरीतियाँ रहेगी? कब तक जाति के आगे योग्यता छोटी पड़ती रहेगी? कब तक समाज में अर्जुन को सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए एकलव्य से अंगूठे का दान लिया जाएगा? कब तक द्रोणाचार्य जैसे पक्षधर राज गुरु बने रहेंगे? कब तक सूर्य समान तेजस्वी कर्ण को सूत पुत्र समझा जाएगा?कब हम आगे बढ़ने के लिए दूसरों को पीछे धकेलना बंद करेंगे? कब समाज को जाति के सूत के अंदर योग्यता का सूर्य देखने वाले नेत्र मिलेंगे?

सन्दर्भ सूची

[१] कवितावली, तुलसी दास, गीताप्रेस गोरखपुर, पृष्ट :120

[२]कबीर की सखियाँ (क्लास नोटस-डॉ अरविंदकुमार मिश्र)

[३] भारतेंदु हरिश्चंद्र, भारत दुर्दशा (क्लास नोटस-डॉ अरविन्द कुमार मिश्र)

[४] रश्मिरथी, राम धारी सिंह दिनकर, सर्ग: १, पंक्ति: ४

[५] रश्मिरथी राम धारी सिंह दिनकर, सर्ग: १, पंक्ति: १३ और १४

[६] रश्मिरथी, राम धारी सिंह दिनकर, सर्ग: १, पंक्ति: ३० और ३१

[७] रश्मिरथी, राम धारी सिंह दिनकर, सर्ग: १,पंक्ति: ७१ और ७२

[८] रश्मिरथी, राम धारी सिंह दिनकर, सर्ग: २, पंक्ति: ७

पद्मावत में भारत की परिकल्पना

विद्या सिंह

(प्रथम वर्ष, हिन्दी विशेष)

आज का भारत विविधताओं से परिपूर्ण है, चाहे वो राजनीतिक क्षेत्र हो या सामाजिक। इस कारण हर समाज की एक विशेष विचारधारा है और यही सत्ता में भी है, जिस कारण कई बार इनमें टकराहट और विरोध उत्पन्न हो जाता है, जो विवादों और बहसों में ही सिमट कर रह जाता है युद्ध में नहीं बदलता। परंतु भारत का एक युग ऐसा भी बीता है जब इन विविधताओं में छोटा सा विवाद भी युद्ध में बदल जाता था। वह युग था मध्यकालीन युग, वह युग इस्लामिक शासकों के आगमन का युग था और यह सब उस समय की पद्धति में बदल गया, इस्लामिक और भारतीय संस्कृति के शासक शासन को छीनने और बचाने के लिए युद्ध कर रहे थे, यह युद्ध रक्त रंजित था। साथ ही उस समय दोनों ही पक्षों में भेद भी जिसके कारण भीतर ही भीतर दोनों गुटों में आंतरिक षड्यंत्रकारी मानसिक युद्ध भी चल रहा था। जिसका सामना कर पाना सभी के लिए संभव नहीं था। उस समय तलवार की धार शासक तय करती थी, मुस्लिम शासक सत्ता में पुरज़ोर थे जिसके कारण ही " राजा कही

सो न्याय कहाओ" अर्थात राजा का कहा ही न्याय है , पद्धति अपने जोर पर थी । जिसके परिणामस्वरूप उस समय आम जनता पूरी तरह से लाचार और सामाजिक संघर्ष का शिकार थी, उस समय जनता का हाल इस तरह था कि जिस संस्कृति का राजा क्षेत्र में विजयी होगा और उस क्षेत्र में उस समाज का बल होगा। दूसरा समाज इसकी शिकायत तक नहीं कर सकता था, वे पूर्णतः लाचार थे। उस समय सत्ता एवं जनता दोनों ही समाज और संस्कृति में विभाजित हो गई थी । यही इनकी टकराहटों का मुख्य कारण था।

जिस समय सभी युद्ध में मरने मारने की कामना कर रहे थे, उस समय कवि और लेखक समाज की उन समस्योओं पर चिंतन और लेखन कर समस्याओं का समाधान खोज रहें थे। उन्हीं में से एक थे 'मलिक मोहम्मद जायसी'। मलिक मोहम्मद जायसी हिंदी साहित्य के मध्यकाल के भक्तिकाव्यधारा के निर्गुण प्रेमाश्रयी कवियों में श्रेष्ठतम सूफ़ी कवि थे। वे अत्यंत ही सरल और उदार सूफ़ी महात्मा एवं प्रेम को आराधना मानने वाले कवि थे। वह उन कवियों में से थे जो उस समय की शासन पद्धति का खुलकर अपने काव्यों में विरोध करते थे,जो उस समय एक दंडनीय अपराध माना जाता था, परंतु फिर भी वह स्वयं की चिंता किए बिना उस समय के समाज सुधार का प्रयास कर रहे थे। इन सभी का प्रमाण उनके महाकाव्य "पद्मावत" में देखने और पढ़ने को मिलते हैं जिसमें वह प्रेम
को पूरे महाकाव्य में केंद्रित करते हैं और द्वेष को खत्म करते हैं । उन्होंने एक लोकप्रचलित लोककथा को साक्ष्यों से जोड़कर एक पूरे महाकाव्य की रचना कर दी।

जायसी के जन्म के विषय में भी हमें 'पद्मावत' से जानने को मिलता है, जिसमे उन्होंने अपना स्व परिचय देते हुए अपने आखिरी कलाम में लिखा है-

" भौ अवतार मोर नौ सदी।

तीस बरस ऊपर कवि बंदी।"(1)

जिससे हमें ज्ञान होता है कि,उनका जन्म 900 हिजरी अर्थात 1492ई. लगभग में हुआ था। उनका जन्म स्थान जिला रायबरेली में जायस नगर था और जायस के होने के कारण ही वह जायसी कहलाए। जिसपर वह लिखते है-

"जायस नगर मौ अस्थानु तहां आई कवि कीन्ह बखानु।"(2)

जायसी एक मुसलमान घराने से थे,लेकिन उनका जन्म और कर्म स्थान भारत था। इसीलिए उनकी लेखन शैली, मनोभाव और संस्कार में इस्लामिक एवं भरतीय संस्कृति का अद्भुत मेल देखने को मिलता है।इसका पूरा प्रभाव उनके काव्यों में झलकता है। "पद्मावत" उनका एक श्रेष्ठतम महाकाव्य माना गया है साथ ही सूफ़ी काव्यधारा में इसे प्रतिनिधि ग्रंथ माना गया है और यह तुलसी के रामचरितमानस का भी प्रेरणा स्रोत माना गया है। इस महाकाव्य में चित्तौड़ के राज रत्नसेन और सिंघलद्विप की राजकुमारी पद्मावती के प्रेम का वर्णन गया है। पद्मावत में केवल प्रेम ही नहीं जायसी द्वारा गढ़ी भारत की एक अद्भुत परिकल्पना भी है। जायसी की पद्मावत दो महान संस्कृतियों के आस पास की कथा को अपनाती है। जायसी इस महाकाव्य में भारतीय समाज एवं संस्कृति के लगभग प्रत्येक पहलुओं पर ध्यान देते हैं। इस प्रेमाख्यान में उन्होंने यहाँ के समाज को ही प्रतिबिंबित किया है। उन्होंने यह सब बड़ी ही कुशलता से किया । इसके प्रत्येक खंड में उनके द्वारा चित्रित हिन्दू परंपराओं को देखने से यह लगता है नहीं कि जायसी हिन्दू धर्म के जानकार नहीं थे।

इसपर आचार्य शुक्ल का एक कथन है कि-

" हिन्दू हृदय और मुसलमान हृदय को जब आमने सामने करके अजनबीपन मिटानेवालो में इन्हीं का नाम लेना पड़ेगा। इन्होंने मुसलमान होकर हिंदुओं की कहानियां , हिंदुओं की ही बोली में पूरी सहृदयता से कहकर उनके जीवन को मर्मस्पर्शी अवस्थाओं के साथ अपने उदार हृदय का पूर्ण सामंजस्य दिखा दिया।"(3)

सूफी कवि होने के कारण उन्होंने पद्मावत का लेखन मनस्वी शैली के अनुसार किया ,परंतु दोनो ही लेखन शैली में ज्यादा कोई अंतर नहीं है।

जायसी ने स्तुति खंड से पद्मावत की शुरुआत की पर उसमें भी उन्होंने हिन्दू पुराणों का सम्मान करते हुए मंगलाचरण की पंक्तियों का भी वर्णन किया और सृष्टि विषयक मान्यताओं को भी मुक्त हृदय से अपनाया । ब्रह्माण्ड, सप्तद्वीप, चौदह भुवन आदि इसके प्रमाण हैं, जो कि इसके प्रथम पद की कुछ पंक्तियों में निहित है-

"किन्हेसि सप्त यही बरमहंडा। कीन्हेसि भुवन चौदह कंडा।" (4)

स्तुति खंड के ही पांचवे पद में हिंदू और इस्लामिक दोनो ही संस्कृति की भांति ईश्वर का वर्णन है-

"जुग जुग देत घटा नहिं, उभै हाथ अब कीन्ह।

और जो दीन्ह जगत मंह, सो सब ताकत दीन्हा।।"(5)

साथ ही जायसी ने उपसंहार में तन, मन, हृदय, बुद्धि, गुरु, जगत, निर्गुण ब्रह्म आदि के आधार पर भारतीय आध्यात्मिक संस्कृति के महाकाव्य को जोड़ने का विनम्र प्रयास किया है।लोक आस्थाओं और परंपराओं को जायसी अपने मनोनुकूल विभिन्न प्रसंगों में स्थान देते हैं। धार्मिक स्थानों की एक सुदीर्घ परंपरा भारतीय संस्कृति में रही है। बादशाह दूती खंड और चित्तौड़ आगमन खंड में जायसी ने नदी स्नान की बात कही है-

"बन बन हेरेऊं वनखंडा। जल जल नदी अठारह गंगा।"

पद्मावत में भारतीय समाज के आर्थिक जीवन को भी दिखाया गया है। इसमें सिंहलद्वीप के हाटबाजारों के वर्णन समकालीन व्यापार की अवस्था को प्रकाशित करते हैं।---

"पै सुठि ऊंच धनिए तहं केरा।

धनी पांच निधनी मुख हेरा।।

लाख करोरन्हि वस्तु बिकाई।

सहसन्हि करें न कोई ओनाई।।".....(6)

पद्मावत के नागमती वियोग खंड में नागमती द्वारा गाए गए बारहमासा के गीत में, उसके विरह के साथ समाज के उस समय के आम जीवन का भी सचित्र वर्णन है।

इस पद्मावत के कई और भी खंड महत्वपूर्ण है जिसमें "पद्मावती गोरा बादल संवाद" खंड और 'बंधन मोक्ष खंड' भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें यह दर्शाया गया है कि एक स्त्री समय आने पर मर्यादा में रहकर भी स्वयं लड़कर अपने आपको बचा सकती है।

इस महाकाव्य का सबसे महत्वपूर्ण खंड है " पद्मावती-नागमती सती खंड" (जौहर) ,इस खंड में रत्नसेन की मृत्यु के पश्चात जब अलाउद्दीन दुर्ग पर आक्रमण करने वाला होता है ,तब पद्मावती और नागमती पूरे चित्तौड़ की स्त्रियों को साथ लेकर जौहर की आग में कूद पड़ती हैं।

इस खंड से जायसी यह कहना चाहते हैं कि भारत का कोई भी नागरिक अलाउद्दीन जैसे शासक का स्वयं पर अधिकार नहीं होने देगा, चाहे इसके लिए उसे अपने प्राण ही क्यों न त्यागने पड़े।" यदि भारतवासियों को जीतना है तो प्रेम की तपस्या से जीतो, विश्वास से जीतो।

जायसी एक सूफी कवि होने के बावजूद मुस्लिम शासक को खलनायक दर्शाते है और प्रेम को विजयी होता दिखाते हैं।

उस अहंकार, द्वेष और क्रूर राजहट के वातावरण में जायसी ने प्रेम पूर्ण भारत की परिकल्पना की। ये स्वयं में ही प्रेम की पीर का शुद्ध विजय है, जिससे द्वेष नष्ट होकर केंद्र में आ प्रेम गया।

जायसी जिस प्रेम के त्याग को 'पद्मावत' में दर्शाते हैं कि क्या वो प्रेम और त्याग आज भी जीवित है ?

संदर्भ सूची

१) आखिरी कलाम, मलिक मुहम्मद जायसी, स्तुति खण्ड(क्लास नोट्स)

२) आखिरी कलाम, मलिक मुहम्मद जायसी (क्लास नोट्स)

३) हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, (अंतिम संस्करण 2019)

४) पद्मावत, मलिक मुहम्मद जायसी,(स्पादक राजनाथ शर्मा) स्तुति खण्ड, प्रथम पद , सातवीं पंक्ति(संस्करण (१९६८)1968)(पृष्ठ:-३)

५) पद्मावत, मलिक मुहम्मद जायसी, (राजनाथ शर्मा)स्तुति खण्ड,पांचवा पद,दोहा(संस्करण 1968)(पृष्ठ:-८)

६) पद्मावत, मलिक मुहम्मद जायसी,(राजनाथ शर्मा)

ज्ञान और अज्ञान : अर्थ, परिभाषा और परिकल्पना

गार्गी प्रखर

(बी .एस .सी , गणित विशेष)

शोध संक्षेप –

सम्प्रति अगर किसी व्यक्ति से पूछें कि आप किन-किन विषयों का ज्ञान रखते हैं? तो वह कुछ न कुछ उत्तर तो अवश्य ही देगा, परन्तु क्या उत्तर देने वाले को या प्रश्न पूछने वाले को ये पता है कि ज्ञान होने का अर्थ क्या है ?

किसी विषय पर ज्ञान होना या जानकारी होना दो अलग-अलग चीज़ें है! ज़्यादातर लोग इसे एक दूसरे का पर्याय समझते है

बल्कि ये उतना ही अलग है जितना की दही और मक्खन । जिस प्रकार जमी हुई दही को मथकर मक्खन निकाला जाता है, उसी प्रकार जब व्यक्ति प्राप्त जानकारी पर चिंतन-मनन करे और उसे हर दृष्टिकोण से समझे , तब उसे उस विषय पर ज्ञान प्राप्त होता है ।

ज्ञान प्राप्ति के लिए हमें अपनी इन्द्रियों पर संयम रखना चाहिए और सभी का आदर भाव से सम्मान करना आना चाहिए ।

<u>मुख्य शब्द</u> –ज्ञान, चिंतन, इन्द्रियों पर नियंत्रण, विद्वता, विवेक, कर्म, योग

<u>प्रस्तावना</u> –

हर्तर्याति न गोचरं किमपि शं पष्णाति यत्सर्वदा
ह्यर्थिभ्यः प्रतिपाद्यमानमनिशं प्राप्नोति वृद्धि पराम् ।
कल्पान्तेष्वपिन प्रयाति निधनं विद्याख्यमन्तर्धन
येषां तान्प्रति मानमुज्झत नृपाः कस्तैः सह स्पर्धते ॥16॥

अर्थ –

ज्ञान अद्भुत धन है, ये आपको एक ऐसी अद्भुत ख़ुशी देताहै जो कभी समाप्त नहीं होती। जब कोई आपसे ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा लेकर आता है और आप उसकी मदद करते हैं तो आपका ज्ञान कई गुना बढ़ जाता है।शत्रु और आपको लूटने वाले भी इसे छीन नहीं पाएंगे, यहाँ तक कि ये इस दुनिया के समाप्त हो जाने पर भी ख़त्म नहीं होगा। अतः हे राजन यदि आप किसी ऐसे ज्ञान के धनि व्यक्ति को देखते है तो अपना अहंकार त्याग दीजिये और समर्पित हो जाइए क्यूंकि ऐसे विद्वानो से प्रतिस्पर्धा करने का कोई अर्थ नहीं है।

ज्ञान ऐसा धन है जिसे ना ही खरीदा जा सकता है और ना बेचा ; इसे तो सिर्फ आदर के साथ ग्रहण करते है और बाँट सकते है। आज के समय में अगर किसी को कुछ न पता हो तो उसे नीचा अनुभव होने लगता है, तब वह अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए कुछ भी अनाब-शनाब कहने लगता है । यहीं आप अंतर देख सकते है , एक जानकार व्यक्ति में और एक ज्ञानी व्यक्ति में – जानकार व्यक्ति अपनी गरिमा बढ़ाने के चक्कर में चुपचाप खड़ा रहता है और अज्ञात रहता है और वही ज्ञानी स्वभाव के व्यक्ति के अन्दर चीज़ों को जानने और समझाने की लालसा रहती है इसलिए वो जिस बात से अज्ञात है उसे पूछने में ज़रा भी हिचकिचाता नहीं है ।

श्रद्धावान्ल्लभते ज्ञानं तत्पर: संयतेन्द्रिय:।

ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति॥39॥

अर्थ-

श्रद्धा रखने वाले मनुष्य, अपनी इन्द्रियों पर संयम रखने वाले मनुष्य , साधनपारायण हो अपनी तत्परता से ज्ञान प्राप्त करते हैं, फिर ज्ञान मिल जाने पर जल्द ही परम-शान्ति (भगवत्प्राप्तिरूप परम शान्ति) को प्राप्त होते हैं।

ज्ञान शब्द जितना सरल है उतना ही कठिन इसको प्राप्त करना है ।अगर मनुष्य के भीतर किसी भी प्रकार की ईर्ष्या, क्रोध, अहम्, या शातिरता हो ,तो ये सब गुण उसे ज्ञान प्राप्त करने से रोकते है । मनुष्य को अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण करना आना चाहिए ताकि जब वह विद्वान से मिले तो उसे इर्ष्या के भाव से ना देखे बल्कि उसके अन्दर की विद्वता को जाने और अपना अहम् दर-किनार कर उससे ज्ञान प्राप्त करे ।

स्वगृहे पूज्यते मूर्खः, स्वग्रामे पूज्यते प्रभुः।

स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।।5।।

अर्थ-

मूर्ख व्यक्ति का अपने घर में महत्व होता है। प्रभु को गाँव में सब पूजते है। देश में राजा को पूजा जाता है। विद्वान को सभी जगहों पर पूजा जाता है। सब जगह उसकी महानता की बाते की जाती है।

मूर्ख व्यक्ति छोटी उपलब्धियों से ही अपना वर्चस्व स्थापित करता है और वह अपने घर तक सीमित रह जाता है और वहीं राजा स्वयं की प्रतिष्ठा बनाने की सोच में अपनी प्रजा तक ही सीमित रहता है। जबकि विद्वान की विद्वता सूर्य की दीप्ती की तरह हर जगह व्याप्त रहती है जो सदैव उज्जवल पथ की ओर अग्रेषित करती है जिसे स्वयं प्रभु भी मानते है ।

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते।

ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्।।12.12।।

अर्थ-

अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है; ज्ञान से श्रेष्ठ ध्यान है और ध्यान से भी श्रेष्ठ कर्मफल त्याग है, त्याग से तत्काल ही शान्ति मिलती है।।

ज्ञान योग-

भारतीय साहित्य में मोक्ष प्राप्ति के तीन साधन गिनाये गये हैं-

ज्ञान, कर्म, उपासना । ज्ञान का सम्बन्ध मस्तिष्क से है ,कर्म का सम्बन्ध इन्द्रियों से है और उपासना का सम्बन्ध हृदय से है। इसी को अंग्रेजी में Knowing, willing, feeling कहते है। ज्ञान के मार्ग को ज्ञानयोग,कर्म के मार्ग को कर्मयोग तथा उपासना के मार्ग को भक्तियोग कहा जाता है।

शंकराचार्य अद्वैतवादी थे, उनका कहना था कि जगत की मिथ्या (नित्य परिवर्तनशील) है, ब्रह्म ही सत्य है,आत्मा ही मूल्यतः ब्रह्म है , यह जो नानात्व दिखाई देते हैं, उसका कारण अज्ञान है । अगर यह बात ठीक है कि अज्ञान ही सब रोगों की जड़ है तो हमारे सब रोगों को काटने का उपाय भी "ज्ञान" के सिवाय दूसरा कोई हो ही नही सकता। यही कारण है कि शंकराचार्य के कथनानुसार गीता का मुख्य प्रतिपाद्य विषय 'ज्ञान-योग' है। कर्म तो करना ही पड़ता है परन्तु कर्म मुख्य नहीं, ज्ञान मुख्य है, कर्म किया जाता है, कर्म का त्याग करने के लिए, सन्यास के लिए, कर्मो से निवृत्ति के लिए।

सांख्यदर्शन के अनुसार - 'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः' अर्थात ज्ञान के बिना मुक्ति नही है। आत्मा के बंधन का कारण केवल अविवेक है। इस अर्थ को दृढ़ करने के लिए ऋषि ने कहा प्रकारांतर संभवाट विवेक एव बन्धः ||16|| अर्थात अन्य किसी प्रकार के संभव न होने से केवल अविवेक ही बंधन का कारण समझाना चाहिए।

<u>निष्कर्ष</u> –

- एस. आर. रंगनाथन के शब्दों में- "ज्ञान सभ्यता संरक्षित सूचना का समग्र योग होता है"।
- जे. एस. शेरा के शब्दों में "ज्ञान बौद्धिक पद्धति द्वारा निस्पादित प्रक्रिया का परिणाम है"।
- वेबस्टर्स न्यू इंटरनेशनल डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश लैंग्वेज के अनुसार- "ज्ञान वास्तविक अनुभव व्यावहारिक अनुभव, कार्यकुशलता आदि के द्वारा प्राप्त जानकारी है"।

अतः ज्ञान को इस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं "अनुभव की अनुभूति ही ज्ञान कहलाता है"।

हम ये भी कह सकते हैं कि ज्ञान शक्ति देता है,और शक्ति ज्ञान प्रदान करती है । उन लोगों पर निश्चित पकड़ बनाने के लिए, जिन्हें समझ नहीं है, ज्ञान लोगों को सामाजिक शक्ति प्रदान करता है ।

ज्ञान की परिभाषायें तो कई विद्वानों ने दी है परन्तु मुख्य उद्देश्य तो यह कि आप ज्ञान से क्या समझते हैं?

<u>सन्दर्भ सूची</u> –

1. भर्तृहरि-नीति-शतका-श्लोक-16
2. श्रीमद् भगवद्गीता चतुर्थ अध्याय-श्लोक 39
3. संस्कृत सुभाषितानि-5
4. श्रीमद् भगवद्गीता अध्याय १२ श्लोक १२
5. विकिपीडिया
6. शिक्षाशास्त्र का समग्र अध्यन-डॉ. अरविन्द कुमार यादव
7 .सांख्यदर्शन 6.16
8 . quizsansar.com
9 .हिन्दीकीदुनिया.com

कंप्यूटर ग्राफिक्स एवं वर्चुअल रिएलिटी : एक संक्षिप्त परिचय

अम्बुज प्रताप सिंह

(बी .एस .सी , कंप्यूटर साइंस विशेष)

आवश्यकता आविष्कार की जननी है । समय – समय पर विज्ञान तथा तकनीक में कई महत्वपूर्ण अनुसंधान हुए हैं । चूँकि वर्तमान युग डिजीटलीकरण तथा तकनीकी का है , विभिन्न क्षेत्रों के विकास में कंप्यूटर ग्राफिक्स ने अहम भूमिका निभाई है । यदि परिभाषा की बात करें , तो कंप्यूटर पर हर वो चीज़, जो न लिखित रूप में हो, न मौखिक

रूप में, वह कंप्यूटर ग्राफिक्स है ।[1] आज ग्राफिक्स ने हमारा जीवन बहुत आसान बना दिया है। हर क्षेत्र चाहे वह शिक्षा का हो , उद्योग का हो अथवा वाणिज्य प्रधान , ग्राफिक्स सब जगह इस्तेमाल किया जाता है । मैं खुद एक छात्र होने के नाते , डेटा स्ट्रक्चर्स के वो विषय जिनको केवल पढ़ के समझने में दिक्कत होती थी , ग्राफिक्स और एनीमेशन की मदद से आसानी से उन्हें समझ लिया । बड़ी बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियां के वे डाटा जो पांच से छह साल पर आधारित होते हैं , ग्राफिक्स से उनका समुचित आँकलन किया जा सकता है ।

कंप्यूटर ग्राफिक्स का बहुतायत इस्तेमाल वर्चुअल रिएलिटी में होता है। यदि सरल शब्दों में समझें, तो वर्चुअल रिएलिटी कंप्यूटर द्वारा उत्पन्न वह कृत्रिम वातावरण है जो सत्य होने का आभास कराती है । या फिर , वर्चुअल रिएलिटी वह सिमुलेटेड (कृत्रिम) अनुभव है , जो पोज ट्रैकिंग और 3 डी दृश्यों के माध्यम से उपभोक्ता को बिल्कुल ही आभासी दुनिया का अहसास कराती है [2] । दिन प्रतिदिन जिस प्रकार वर्चुअल रिएलिटी की उपयोगिता बढ़ रही है , उससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वर्चुअल रिएलिटी रिवेन्यूज की कीमत 2023 तक करीबन 50 प्रतिशत तक बढ़ जाएगी । वर्चुअल रिएलिटी न केवल पूर्ण रूप से त्रिविम प्रत्यक्षोकरण (स्स्टेरोस्कोपिक विजुअलाइजेशन) प्रदान करती है, अपितु प्रतिभागी वर्चुअल तत्वों के साथ संबंध भी स्थापित कर सकते हैं।[4] ग्राफिक्स के कई ऐसे उपकरण हैं , जो इस कार्य के लिए उपयोग किए जाते हैं। वे न केवल मॉडल के मेश साइज को कम कर देते हैं , बल्कि कृत्रिम वास्तविकता को पूर्ण रूप से सजीव रखते है । इस कार्य के लिए अतिरिक्त रूप से किसी मॉडल कार्यकारिणी की जरूरत नहीं पड़ती । यदि हम 3 D मॉडल की बात करें , तो उसमे मुख्यतः जिस तकनीक की जरूरत पड़ती है वह शेडिंग होती है । यह तकनीक न केवल कंप्यूटर सिमुलेशन के लिए आवश्यक वर्चुअल मॉडल के विकास के लिए इस्तेमाल किया जाता है , अपितु यह कई और कार्य जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, बिग डाटा का आंकलन आदि ।
कंप्यूटर ग्राफिक्स की मदद से जब 3 डी वातावरण निर्मित किया जाता है, तब निम्न ग्राफिक्स तत्त्वों का आलंबन लिया जाता है।
• लाइटनिंग : इसके माध्यम से निर्मित वातावरण की लाइटिंग को नियंत्रित किया जाता हैं। कहाँ कितनी छाया की आवश्यकता है, कहाँ प्रकाश की , यह इस पर ही निर्भर करता है।
• 3 डी ऑब्जेक्ट्स : इन तत्त्वों के माध्यम से सीन को निर्मित करने का आधार बनता है। यह ये भी निर्धारित करता है कि स्पेक्ट्रम में किस सीन को रखा जाएगा ।
• कैमरा : कैमरा के माध्यम से 3 डी वस्तु की दृश्यता की प्रक्रिया तथा उनका स्क्रीन पर प्रतिपादन किया जाता है।
• सीन : यह वो जगह है , जहां ऊपर के सभी तत्वों का समायोजन किया जाता है। यह बताता है कि, वर्चुअल स्पेस का आकार कितना होगा ।[3]
कंप्यूटर ग्राफिक्स के कई उपयोग हैं। उनमें से प्रमुख उपयोग निम्नलिखित हैं :
एडेड डिजाइन : ऑटो मोबाइल उद्योग तथा इलेक्ट्रॉनिक उपकरण आधारित उद्योगों में ग्राफिक्स बड़े स्तर पर उपयोग होता है।
2.विजुवलाईज़ेशन : वह कंपनियां जो काफी विस्तृत डाटा ट्रेंड्स का विश्लेषण करते है , वह मुख्यतः ग्राफिक्स का इस्तेमाल करके अपने कंपनी की सम्यक समीक्षा करते हैं।
3.शिक्षा से संबंधित क्षेत्र : ग्राफिक्स की मदद से , 3 डाइमेंशनल आधारित विषयों को आसानी से समझा जा सकता है। प्लेंस, वेव मोशन, सिग्नल्स , डाटा स्ट्रकचर संबंधित विषयों को बड़े ही रुचिकर ढंग से हृदयस्थ किया जाता है ।
4.कंप्यूटर आर्ट : आज सभी को अच्छे तथा कमर्शियल आर्ट्स की आवश्यकता होती है। इन आर्ट्स के लिए कंप्यूटर ग्राफिक्स एक बेहतर विकल्प है, जिसकी वजह से हम बड़ी आसानी से लोगो, कार्टून तथा एनीमेशन डिजाइन कर सकते हैं ।
5. ग्राफिकल यूजर इंटरफेस : किसी भी लेआउट के डिजाइन में पॉप अप मेन्यू, तरह तरह के आइकन , यूजर फ्रेंडली वातावरण बहुत जरूरी है , और यह सब ग्राफिक्स की सहायता से किया जा सकता है।
इमेज प्रोसेसिंग के लिए भी ग्राफिक्स का इस्तेमाल किया जाता है। जो इमेज पहले से उपलब्ध होती है , उसको और अधिक परिष्कृत रूप से प्रोसेस करने के लिए ग्राफिक्स के उपकरणों और अंगो का प्रयोग

होता है । मशीन के डिजाइन, मोडिफाइंग तथा निर्माण के लिए ग्राफिक्स के टूल्स का इस्तेमाल इसलिए किया जाता है क्योंकि ग्राफिक्स किसी भी ड्राइंग के निर्माण के लिए एक सीमित तथा क्लीयर परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है। प्रेजेंटेशन ग्राफिक्स जैसे बार चार्ट्स, ग्राफ्स , पाई चार्ट्स जैसे तत्व जिनके मदद से बड़े से बड़े डाटा को भी आसानी से प्रस्तुत किया जा सकता है , उसमे भी ग्राफिक्स का योगदान होता है । इसी प्रकार, आज जीवन के हर आयाम में ग्राफिक्स एक अभिन्न अंग की तरह जुड़ा हुआ है ।

ग्राफिक्स के बढ़ते उपयोग से इस बात का आसानी से मूल्यांकन किया जा सकता है कि, आने वाले समय में ग्राफिक्स का बाजार काफी विस्तृत होगा। यदि आंकड़ों पर जाएं तो, ग्राफिक्स मार्केट की कुल कीमत 2021 में 178.7 मिलियन थी। यह अनुमान लगाया गया था कि 2022 तक यह कुल 8 प्रतिशत तक बढ़ जाएगी। वर्तमान परिस्थितियों की समीक्षा से यह भी अनुमान लगाया जा रहा है कि 2023 तक इसकी कीमत $ 406.3 मिलियन हो जायेगी। [5] इस वृद्धि के पीछे मुख्य कारण है, ग्राफिक्स तथा वर्चुअल रिएलिटी की बढ़ती मांग। आई . डी . सी (२०१८) की माने तो वर्चुअल रिएलिटी में होने वाला निवेश चार सालों में 21 फोल्ड गुना हो सकती है, जिसकी कुल कीमत 2022 तक 15.5 बिलियन यूरो होगी। वी आर तथा ए आर दोनों तकनीक वह साधन हैं, जिससे कंपनियों में डिजीटल परिवर्तन आ रहा है, जिस कारण सेस्याज अनुमान लगाया जा रहा है कि 2022 तक करीबन आधी यूरोपियन कंपनियां वी आर तथा जिस तरह से विज्ञान नित नए अनुसंधान कर रहा है, वह दिन दूर नही जब आभास और सत्य में ज्यादा फर्क नहीं रहेगा। इसके अपने शुभ तथा अशुभ परिणाम हैं। यह हमारे विवेक पर निर्भर करता है कि हम इसका इस्तेमाल कैसे करते हैं ।

सन्दर्भ :

[1]. व्हाट इज कंप्यूटर ग्राफिक्स? कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रोग्राम ऑफ कंप्यूटर ग्राफिक्स
[2]. “गेट रेडी टू हियर अ लॉट मोर अबाउट एक्स र “वायर्ड

[3]. “3 डी कंप्यूटर ग्राफिक्स एंड वर्चुअल रिएलिटी “, बारानिस्लाव सोबोता तथा मिरिमा मत्तोवा

[4]. 3 D मॉडलिंग एंड कंप्यूटर ग्राफिक्स इन वर्चुअल रिएलिटी । युक मिंग तंग एच. एल. हो

[5].फ्यूचर मार्केट इनसाइट रिपोर्ट्स कंप्यूटर ग्राफिक्स मार्केट

फेक न्यूज़, सोशल मीडिया और आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस

सिद्धार्थ मौर्या

(बी.ए. प्रोग्राम, द्वितीय वर्ष)

आज पूरा विश्व किसी न किसी माध्यम से खबरें पढ़ता , देखता या सुनता है । इन खबरों का मूल उद्देश्य पाठक, श्रोता या दर्शक वर्ग को किसी घटना या जानकारी को सत्यता और सटीकता के साथ अवगत कराना होता है । पर क्या होगा जब सत्यता का बोध कराने

वाली यह खबरें ही झूठी होंगी एवं उनकी प्रमाणिकता गलत सिद्ध होने लगेगी ?

आज ऐसी झूठी खबरों को हम आम बोलचाल की भाषा मे फेक न्यूज़ बोलते हैं । यानी वह खबर जिसमें सत्यता नहीं है या सही खबर में छेड़छाड़ कर उसे प्रस्तुत किया जा रहा हो ।

आपने भी कहीं ना कहीं फेक न्यूज़ को जरूर पढ़ा होगा या उसके बारे में सुना होगा । हम फेक न्यूज़ तक सोशल मीडिया के जरिए , फर्जी वेबसाइट के जरिए और मीडिया से मिली गलत जानकारियों के चलते पहुंचते हैं , जो देखने में तो छलावे की तरह असली जैसी होती है पर सच में ऐसा नहीं होता ।

फेक न्यूज़ में निम्नलिखित 7 तत्वों का इस्तेमाल किया जा सकता है -

1. व्यंग्य (जिसका उद्देश्य हानि पहुँचाना नहीं होता परंतु उसमें बेफकूफ बनाने की संभावनाएं होती है।)
2. भ्रामक सामग्री (जो किसी मुद्दे या व्यक्ति पर आधारित हों ।)
3. प्रतिरूपित सामग्री (जहाँ असली स्रोत को बदल दिया गया हो।)
4. मनगढंत सामग्री
5. सामग्री के तत्वों में असंबन्ध
6. गलत संदर्भ (जब किसी सामग्री को गलत संदर्भ के साथ प्रस्तुत किया जाए)
7. किसी को गलत तरीके से प्रभावित करने के उद्देश्य से प्रस्तुत सामग्री **[1]**

फेक न्यूज़ के फैलने का सिलसिला दिन-प्रतिदिन लगातार बढ़ता चला जा रहा है। फेक न्यूज़ अधिकतर डिजिटल मीडिया के माध्यम से उत्पन्न होता है एवं कुछ सेकंडों में ही हज़ारो लोग के साथ साझा हो जाता है। एक तरफ सोशल मीडिया जहाँ सत्य एवं वास्तविक खबरों को आसानी से दुनिया के कोने-कोने तक पहुंचने में सुलभ बनाता है वही दूसरी तरफ फर्जी खबरों को भी उतनी ही तेज़ी से फैलने में सक्षम बनाता है। और भी अधिक समस्या तब उत्पन्न होती है जब सोशल मीडिया पर आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस का प्रयोग करके फेक न्यूज़ फैलाया जाता है ।

आजकल फेक न्यूज़ एडिटेड वीडियो, तस्वीरों, मीम और पोस्ट के रूप में सोशल मीडिया पर देखा जा सकता है, जिसका उद्देश्य लोगो को भटकाना होता है। ऐसे फेक न्यूज़ अक्सर राजनीतिक व सामाजिक रूप से प्रेरित भी होते है **[2]**

आज अरबों लोग सोशल मीडिया का इस्तेमाल अपने अपने एकाउंट के माध्यम से कर रहे हैं और इन्हीं लोगों के बीच लाखों ऐसे एकाउंट्स हैं जो किसी इंसान के नहीं हैं । कंप्यूटर की भाषा मे इन एकाउंट्स को बॉट (bot) कहते हैं । कंप्यूटर द्वारा प्रोग्रामिंग कर के इन बॉट को बनाया जाता है । 2017 में फेसबुक पर 14 करोड़ , इंस्टाग्राम पर 2.7 करोड़ , ट्विटर पर 2.3 करोड़ बॉट एकाउंट थें **[3]** यानी कुल 19 करोड़ बॉट एकाउंट थें ।

अमेरिका के नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन की रिपोर्ट के अनुसार, मार्च 2021 में कोविड 19 वाइरस से जब विश्व भर में 11.5 करोड़ लोग संक्रमित हो चुके थे और 25 लाख लोग अपनी जान गंवा बैठे थे , उस दौरान सोशल मीडिया पर कुल मौजूद बॉट में 66 प्रतिशत बॉट कोरोना से जुड़ी झूठी खबरें फैला रहे थें । इस दौरान लगभग 72 प्रतिशत अमेरिकी व्यक्ति कोरोना से जुड़ी खबरों के लिए ऑनलाइन माध्यम पर निर्भर थे और इनमें से 47 प्रतिशत लोगो के जानकारी का स्रोत सोशल मीडिया था । एक अध्ययन से यह भी पता चलता है कि अमेरिका के 33 प्रतिशत लोगो ने बताया कि उन्होंने सोशल मीडिया पर ढ़ेर सारी भ्रामक खबरें देखी जो बिल्कुल सत्य नही थीं **[4]**

बॉट एकाउंट इतने खतरनाक होते हैं कि एक साधारण मनुष्य की तरह वह किसी से बातें कर सकते हैं , तस्वीरें सांझा कर सकते हैं । आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से बॉट ऐसा करने में सक्षम हो पाते हैं। उदाहरण के लिए ट्विटर पर बॉट लोगों से बातचीत कर उन्हें प्रभावित करते हैं एवं भ्रामक बातें फैला सकते हैं । कई बार प्रभावशाली ट्विटर उपयोगकर्ताओं को बॉट लक्ष्य बनाते हैं और उनके फॉलोवर्स को भ्रामक संदेश भेज कर उनके भरोसे को कमजोर करते हैं । बॉट उसी प्रकार से संदेश भेजते एवं कार्य करते है जिस प्रकार उनकी प्रोग्रामिंग हुई होती है **[5]**

Al विज्ञान रूपी बरगद से निकली वह शाखा है जो विज्ञान का विनाश करने के लिए तैयार है । आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के मदद से कोई भी तस्वीर और चलचित्र बनाई जा सकती है एवं अलसी तस्वीरों और चलचित्रों के साथ

बदलाव भी किया जा सकता है । इन बदलावों को हम इतनी आसानी से नही पकड़ सकते क्योंकि ये बिल्कुल असली जैसे लगते हैं पर होते नहीं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से ऐसा वीडियो बना सकते हैं जिसमे कंप्यूटर द्वारा बनाया एक आदमी, जो हम चाहे वो बोल सकता है। इस तकनीक का इस्तमाल फर्जी वीडियो कालिंग के लिए और फेक विडिओ बनाने के लिए किया जा रहा है। आज के दौर में तो यह भी संभव हो गया है कि किसी वास्तविक इंसान के चेहरे को विडिओ में इस्तेमाल किया जा सकता है ओर उससे उसी की आवाज़ में कुछ भी कहवाया जा सकता है। ऐसे ही घटना पिछले वर्ष हुए जब रूस-यूक्रेन युद्ध छिड़ा था । इस दौरान एक वीडियो बहुत तेज़ी से प्रसारित हुआ जिसमें यूक्रेन के राष्ट्रपति वलोडिमिर ज़ेलेंस्की यह बोल रहे थें कि "हमने घुटने टेक दिए है"। परंतु बाद में पता चला कि वह वीडियो आर्टिफिशल इंटेलिजेंस के मदद से बनाया गया था। **[6]**

इस प्रकार की फर्जी वीडियो का इस्तमाल आज विश्व भर में अलग-अलग लोगों द्वारा अलग अलग नीयत से किया जा रहा है, खासकर राजनीतिक, सामाजिक व कूटनीतिक संदर्भो में ।

सैन फ्रांसिस्को में स्थित (ओपन ए आई) कंपनी के द्वारा हाल में ही नवम्बर 2022 में (चैट जी पी टी) नाम का एक टूल बनाया गया जिसका इस्तेमाल आज पूरी दुनिया कर रही है ।

यह एक छोटे से निर्देश देने पर किसी भी प्रकार के लेख लिख सकता है । एक साधारण कवि का लेखक जैसे यह कविताएं एवं कहानियां लिख सकता है । परंतु इसमे इंसानी बुद्धि , विवेक और रचनात्मकता नहीं है । यह आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस और कुछ प्रोग्रामिंग के आधार पर चलता है जिसके कारण इसके माध्यम से लिखे गए लेख या समाचार के गलत होने के पूरी संभावनाएं हैं। **[7]**

आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस की मदद से जब इतनी आसानी से फेक न्यूज़ बनाया जा सकता है और सोशल मीडिया के माध्यम से फैलाया जा सकता है तो क्या इन्हीं के माध्यम से इसे फैलने से रोका जा सकता ? इन्हें पहचाना जा सकता ?

फ़ोटो वीडियो और पोस्ट्स की सत्यता एवं प्रमाणिकता की जांच आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस द्वारा एक ही तरीके से किया जा सकता है जिसमें ए. आई टूल यह जांच करता है कि सोशल मीडिया पर प्रसारित हो रहे उस पोस्ट के प्रसारित होने की शुरुआत कहाँ से हुई और जहां से उसका प्रसारण शुरू हुआ वह विश्व स्तर पर खबरों के लिए भरोसेमंद स्रोत है या नहीं।

इस तरह ए आई टूल हमें यह जानकारी दे पायेगा कि पोस्ट के फैलने का सिलसिला कहाँ से शुरू हुआ। उसके बाद हम अपने विवेक से आसानी से पता लगा सकते है कि वह किन स्रोतों से उत्पन्न हुआ है। आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस के मदद से ऐसा सॉफ्टवेयर बनाने का प्रयास चल रहा है जिसकी मदद से फेक न्यूज़ को पहचाना जा सके ।

सन्दर्भ :

1. https://firstdraftnews.org/articles/fake-news-complicated/ (Claire Wardle - first draft news)
2. https://www.lowyinstitute.org/the-interpreter/social-media-india-fans-fake-news मुरली कृष्णन - लोए इंस्टीट्यूट)
3. C. A. de L. S. Berente Nicholas, “Is That Social Bot Behaving Unethically?,” Communications of the ACM, vol. 60, no. 9, pp. 29–31, Sep. 2017 ,https://cacm.acm.org/magazines/2017/9/220438-is-that-social-bot-behaving-unethically
4. J Med Internet Res .Bots and Misinformation Spread on Social Media: Implications for COVID-19 , 2021 MAY . https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC8139392/
5. E. Ferrara, O. Varol, C. Davis, F. Menczer, and A. Flammini, “The Rise of Social Bots,” Communications of the ACM, vol. 59, no. 7, pp. 96–104, Jun. 2016 https://dl.acm.org/doi/pdf/10.1145/2818717

6. Adam Satariano and Paul Mozur - रिपोर्ट न्यू यॉर्क टाइम्स
https://www.nytimes.com/2023/02/07/technology/artificial-intelligence-training-deepfake.html

7. https://www.bbc.com/news/technology-49446729

जाति एवं वर्ण व्यवस्था का यथार्थ

मुकुल शर्मा

(स्नातक, हिंदी विशेष, प्रथम वर्ष)

"जाति" शब्द स्पेनिश और पुर्तगाली शब्द "कास्ट" से आया है, जिसका अर्थ है "जाति, वंश या नस्ल।" जब पुर्तगालियों ने भारत में 'जाति' के रूप में पहचाने जाने वाले वंशानुगत भारतीय सामाजिक समूहों के लिए जाति शब्द

का इस्तेमाल किया, तो वे इसे समकालीन अर्थों में इस्तेमाल कर रहे थे। 'जाति' शब्द 'जन' धातु से बना है, जिसका अर्थ है 'जन्म देना'।

सामाजिक ऐतिहासिक सिद्धांत के अनुसार भारत में आर्यों के आगमन को जाति व्यवस्था की शुरुआत कहा जाता है। लगभग '१५०० ईसा पूर्व' आर्य भारत में आए। आर्य स्थानीय संस्कृतियों से बेखबर थे। उन्होंने उत्तर भारत में स्थानों को जीतना और उन पर नियंत्रण करना शुरू कर दिया, साथ ही स्थानीय आबादी को दक्षिण क्षेत्र के जंगलों और पहाड़ों में धकेल दिया। आर्यों को तीन श्रेणियों में बांटा गया था। योद्धाओं के पहले समूह को राजन्य के रूप में जाना जाता था, लेकिन अंततः उन्होंने अपना नाम बदलकर क्षत्रिय रख लिया। ब्राह्मणों के रूप में जाने जाने वाले पुजारियों ने दूसरे समूह का गठन किया। इन दोनों संगठनों ने राजनीतिक स्तर पर आर्य नेतृत्व के लिए प्रतिस्पर्धा की। इस युद्ध में ब्राह्मणों को सफलता मिली। वैश्य तीसरा समूह था, जिसमें किसान और शिल्पकार शामिल थे। इन स्थानीय लोगों को अधीन कर लिया गया और आर्यों द्वारा नौकर बना लिया गया जिन्होंने विजय प्राप्त की और उत्तर भारत के कुछ हिस्सों पर अधिकार कर लिया। बहिष्कृत और तीन आर्य वर्णों के बीच, शूद्र वर्ण है, जो आम मजदूरों से बना है। शूद्र दो समूहों में विभाजित थे। एक स्थानीय लोगों का वंशज था जिसे आर्यों ने जीत लिया था, जबकि दूसरा आर्यों का वंशज था जिसने स्थानीय लोगों के साथ विवाह किया था।

भारत में, अधिकांश अन्य देशों की तरह, पुत्र को अपने पिता का व्यवसाय विरासत में मिलता है। परिणामस्वरूप, ऐसे परिवार उभरे जिन्होंने पीढ़ी दर पीढ़ी एक ही पारिवारिक पेशे का अभ्यास किया, जिसमें बेटे ने अपने पिता के व्यवसाय को जारी रखा। जैसे-जैसे इन परिवारों का आकार बढ़ता गया, उन्हें जाति या समुदाय कहा जाने लगा। एक ही व्यापार करने वाले विभिन्न परिवारों ने सामाजिक बंधन बनाए और एक साझा समुदाय का गठन किया, जिसे जाति कहा जाता है।

गैर-आर्यों को बाद में आर्यों द्वारा जाति व्यवस्था में शामिल किया गया जिन्होंने इसे विकसित किया। विभिन्न व्यवसायों की विभिन्न जातियों को उनके व्यवसाय के आधार पर विभिन्न वर्णों में बाँट दिया गया। क्षत्रिय वर्ण में अन्य विदेशी आक्रमणकारी शामिल थे जिन्होंने भारत के क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की और राज्यों की स्थापना की। हालाँकि, यह संभावना है कि आर्यों की रणनीति मूल भारतीय समुदायों को उनके अंदर विलय करने की नहीं थी, और परिणामस्वरूप, आर्यों से पहले भारत में मौजूद कई कुलीन और योद्धा समाजों को क्षत्रिय उपाधि से वंचित कर दिया गया था।

भारत में जाति व्यवस्था प्राचीन काल से चली आ रही है और मध्ययुगीन, प्रारंभिक आधुनिक और आधुनिक भारत, विशेष रूप से मुगल साम्राज्य और ब्रिटिश राज में कई जाति अभिजात वर्ग द्वारा बदल दी गई है। जाति व्यवस्था, जैसा कि हम अब जानते हैं, कहा जाता है कि मुगल युग के पतन और भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासन की स्थापना के बीच हुई घटनाओं के परिणामस्वरूप विकसित हुई थी। मुगल वंश के पतन ने शक्तिशाली पुरुषों के विकास को

जिन्होंने खुद को राजाओं, पुजारियों और सन्यासियों के साथ जोड़ा, जाति के आदर्श के शाही और मार्शल संस्करण का समर्थन किया, साथ ही साथ जातिविहीन सामाजिक समूहों को अलग-अलग जाति समुदायों में फिर से आकार दिया।

जाति का जन्म के साथ बहुत गहरा सम्बन्ध है। भारत की जाति व्यवस्था की उत्पत्ति विभिन्न विचारों के अधीन है। धार्मिक सिद्धांत के अनुसार वर्णों का निर्माण विश्व के निर्माता 'ब्रह्मा' के शरीर से कथित तौर पर किया गया था। उनके सर से 'ब्राह्मणों' की उत्पत्ति हुई, हाथों से ' क्षत्रिय ' उत्पन्न हुए, उसकी जाँघों से ' वैश्य ' और उनके पैरों से ' शूद्र ' उत्पन्न हुए।

महर्षि वेदव्यास द्वारा लिखित ग्रंथ महाभारत (जिसमे अठारह पर्व हैं) के ' शांति पर्व ' में भगवान श्री कृष्ण ने कुंती के ज्येष्ठ पुत्र धर्मराज के नाम से अलंकृत युधिष्ठिर से कहा कि

एक वर्णमिदं पूर्व विश्वमासीद् युधिष्ठिर ।

कर्म क्रियामिभेदेन चातुर्वर्ण्यं प्रतिष्ठितम्।।

अर्थात,

हे युधिष्ठिर ! प्रारम्भ में ये सम्पूर्ण संसार एक ही वर्ण था परन्तु गुण और कर्म के भेद के करण यह ४ वर्णों में विभाजित हो गया।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ।

ऊरू तदस्य यद् वैश्यः पद्भ्या शूद्रो अजायत ।।११।।

(ऋग्वेद ३१/११)

यह मंत्र संसार की प्रथम पुस्तक कहे जाने वाले ऋग्वेद के १०वें मंडल के अंतर्गत ९० वें सुक्त का मंत्र संख्या १२ है। जिसमे यह बताया गया है कि मुख की भाँति त्यागी, तपस्वी, ज्ञानी मनुष्य ब्राह्मण पद का अधिकारी होता है।

भुजाओं की भाँति रक्षा में तत्पर, लड़ने-मरने के लिये सदा तैयार अपने प्राणों को हथेली पर रखने वाले क्षत्रिय होते हैं।

अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।

दानं प्रतिग्रहचैव ब्राह्मणानामकल्पयत्। ।

(मनुस्मृति १/८८)

मनुस्मृति के अनुसार ब्राह्मणों के छः कार्य इस प्रकार हैं,"पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना, दान लेना ।"

'प्रजाना रक्षण दानमिज्याध्ययनमेव

विषयप्रसक्तश्च क्षत्रियस्य समागतः।

(मनुस्मृति १/८९)

मनुस्मृति का उक्त श्लोक क्षत्रियों के कार्यों का बखान करता है मनुस्मृति में प्रजा की रक्षा, दान देना, यज्ञ करना, पढ़ना, अन्य विषयों में मन न लगना ये सब क्षत्रिय कर्म बताये गये हैं।

पशूना रक्षण दानमिज्याध्ययनमेव च।

वणिक्पथं कुसीदं च वैश्यस्य कृषिमेव च।

(मनुस्मृति १/९०)

प्रस्तुत श्लोक मनुस्मृति नामक ग्रंथ का है तथा इसमे वैश्यों के कार्यों का बखान करते हुए मनुस्मृतिकार कहते हैं कि पशुओं की रक्षा करना, दान देना, यज्ञ करना, पढ़ना, व्यापार करना, ब्याज और खेती करना ये कर्म वैश्य वर्ण के लोगों के बनाए गये हैं।

"एकमेव तु शूद्रस्य प्रभुः कर्म समादिशत्।

एतेषामेव वर्णानां शुश्रूषामनसूयया।।

(मनुस्मृति १/०१)

शूद्र वर्ण के लिए तीनो वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य की सभी प्रकार से सहायता और सेवा करना बताया है। मनुस्मृति ग्रंथ में कहा गया है कि शूद्र का एक ही कर्म है कि. वह इन चारों वर्णों की निष्कपट होकर सेवा करें।

मनुस्मृति में शुद्रो के बारे में अन्य परिभाषाएं भी मिलती हैं जैसे

" प्रत्यवायेन शूद्रताम् "

(मनुस्मृति ४.२४५)

अर्थात्

जो व्यक्ति ब्राह्मण कुल में पैदा हुआ है तथा नीच संगत तथा गलत आचरण से वह भी शूद्र ही कहलायेगा।

किसी द्विज के यहाँ यदि कोई शूद्र अतिथिरुप में आ जाये तो उसे भोजन कराने का आदेश है

० श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार

कहा जाता है कि उपनिषद रूपी गायों को दुहने वाले भगवान श्री कृष्ण हैँ तथा दुहने के पश्चात दुग्ध रूपी अमृत गीता है श्रीमद्भगवद्गीता सभी उपनिषदों के अमृत रूपी रस के रूप में हमारे बीच उपस्थित है। गीता में हमे वर्ण व्यवस्था तथा जाति के बारे में भी पढ़ने को मिलता है भगवान श्री कृष्ण गीता के अध्याय ४ के श्लोक संख्यकि १३ में कहते हैँ कि -

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः ।

अर्थात्

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैँ कि हे पार्थ! गुण और कर्मों के आधार पर चार वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) मेरे द्वारा रचे गये हैं।

आगे गीता के अध्याय १८ के श्लोक संख्या ४१ में कहा गया है कि -

ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परन्तप।

कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः ॥

(गीता १८.४१)

अर्थात्

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश और शुद्रों को उनके कर्म और स्वाभाव से उत्पन्न गुणों के अनुसार बांटा गया है अर्थात जिसका जैसा कर्म और स्वाभाव है उसी के अनुसार उसके वर्ण और जाति का निर्धारण किया जायेगा।

जैसे यादी किसी ब्राह्मण के लक्षण शूद्र के जैसे हैं तो उसे ब्राह्मण नहीं शूद्र मना जायेगा और यदि किसी शूद्र के लक्षण ब्राह्मण के जैसे हैं तो उसे शूद्र नहीं ब्राह्मण मना जायेगा। यानी राजा का बेटा तभी राजा बनेगा जब उसके कर्म एक राजा के समान होंगे अन्यथा वह एक सामान्य प्राणी ही होगा।

श्रीमद्भगवद्गीता में अलग अलग वर्णों के कार्य भी बताये गये हैं ब्राह्मणों के अलग कार्य हैं, क्षत्रियों के अलग कार्य हैं, वैश्यो के अलग कार्य हैं तथा शुद्रो के अलग कार्य हैं जैसे -

गीता में ब्राह्मणों के नौ कार्य बताये गये हैं

शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च ।

ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम्॥

(श्रीमद्भागवद्गीता १८.४२)

अर्थात्

शम, दम, तप, शौच, क्षान्ति, आर्जव, ज्ञान, विज्ञान और आस्तिक्य ये सब ब्राह्मण के स्वाभाविक कर्म हैं।

वर्तमान समय में जितने भी लोग स्वयं को ब्राह्मण कहते है और गीता, वेद आदि को मानते है। उन्हें विचार करना चाहिए कि क्या उनमें ये नौ गुण है जो ब्राह्मणों के लिए बताये गये हैं। उन नौ गुणों की विस्तृत व्याख्या अत्यंत विशाल है इस कारणवश यहां हम केवल व्यष्टि में इन नौ गुणों को बताएंगे।

१) शम - अंतःकरण (मन) को वश में करना ।

२) दम - इन्द्रियों का दमन करना ।

३) तप - वाणी और मन को तपा कर शुद्ध करना, धर्म पालन के लिए कष्ट सहना तप है।

४) शौच - भीतर-बाहर से शुद्ध रहना ।

५) क्षान्ति - दूसरों को क्षमा करना ।

६) आर्जव - निष्कपट भाव को आर्जव कहते हैं।

७) ज्ञान - वेद, शास्त्र आदि का ज्ञान होना तथा ज्ञान कराना।

८) विज्ञान - उपनिषत्प्रतिपादित आत्मज्ञान का अनुभव।

९) आस्तिक्य - वेद, शास्त्र, ईश्वर आदि में श्रद्धा रखना ।

जिस प्रकार ब्राह्मण के लिए ९ कार्य बताये जीव हैं उसी भांति क्षत्रियों के लिए भी श्रीमद्भगवद्गीता में ७ कार्यों का वर्णन किया गया है जो इस श्लोक के साथ इस प्रकार हैं -

शौर्यं तेज धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्।

दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम् ॥

यानी जो व्यापार करते है उन्हें वैश्य कहा जायेगा। और जो सेवा करते है उन्हें शूद्र कहा जायेगा। शूद्रों के विषय में ऐसा भी कहा गया है कि चारों वर्णों की सेवा करना शूद्र का स्वाभाविक कर्म है। तो इसमें कोई गलत बात नहीं है। क्योंकि सेवा (नौकरी) के बदले धन प्राप्त होता है। सभी वर्ण में शूद्रों की आवश्कता है। एक ब्राह्मण का घर बिना शूद्र के नहीं बन सकता। एक क्षत्रिय का महल, भोजन, तलवार आदि बिना शूद्र के नहीं बन सकती। एक वैश्य का व्यापार बिना शूद्र के नहीं हो सकता। यहाँ तक की शूद्र स्वयं का घर बिना शूद्र के नहीं बना सकता। इसलिए चारों वर्णों के लिए सेवा (नौकरी) करना शूद्र का स्वाभाविक कर्म है, ऐसा कहना उचित ही है। इसमें किसी को लज्जा आदि नहीं आनी चाहिए।

० स्कंदपुराण के अनुसार —

जन्मना जायते शूद्रः, संस्काराद् द्विज उच्यते ।

अर्थात्

प्रत्येक व्यक्ति जन्म से शूद्र होता है, उपनयन संस्कार में दीक्षित होकर ही द्विज बनता है।

सन्दर्भ सूची

१) थापर, रोमिला.२००२, द पैंग्वीन हिस्ट्री ऑफ अर्ली इंडिया फ्रॉम द ओरिजिन्स टू ए.डी. १३००, पेंग्वीन

२)नरसू,पी.लक्ष्मी. संपादक: डा.सुरेंद्र अज्ञात, जाति : एक अध्ययन

३) श्रीमद्भगवद्गीता *(यथारूप)*, गीताप्रेस गोरखपुर, नई दिल्ली ।

४) मनुस्मृति, प्रभात प्रकाशन

५) संस्कृत विभाग, शोध आलेख, इलाहबाद विश्वविद्यालय, इलाहबाद।

६)https://gayajidham.com/awesome-reading/classification-by-manusmriti/138

८)https://www.bbc.com/news/world-asia-india-35650616

नूरजहां की प्रशासन दक्षता

अभिषेक कुमार गुप्ता

(इतिहास विशेष, तृतीय वर्ष)

मुग़ल काल के इतिहास में, जहाँगीर (1605 - 1627) का शासन न केवल राज्य के विस्तार में उसकी

भूमिका या एक सौंदर्यवादी और प्रकृतिवादी के रूप में उसकी विशेषता के लिए अद्वितीय था बल्कि अधिक विवादास्पद रूप से अपनी पसंदीदा रानी मेहरूनिसा के महत्व के लिए था। कई इतिहासकारों ने नूरजहाँ के व्यक्तित्व पर टिप्पणी करते हुए उसकी भूमिका को एक पत्नी और रानी से परे देखा है। यह माना जाता है कि नूरजहां के अंदर ऐसे अद्भुत गुणों का समागम था जिसका उस युग की अन्य रानियों में पूर्णतयः अभाव था, और जहाँगीर के शासन के दौरान मुगल दरबार में उसका वास्तव में शक्तिशाली प्रभाव था। हालाँकि, उन कारणों का विश्लेषण करना भी महत्वपूर्ण है जिनके कारण इतिहासकारों ने उसके राजनीतिक प्रभाव को सामान्य सीमा से परे जाने का अनुमान लगाया।

नूरजहां जिसका बचपन का नाम मेहरून्निसा था, उसने अपने पहले पति शेर अफगान की मृत्यु के बाद हरम में शामिल हो कर 1611 में शहंशाह जहांगीर से विवाह किया था। इतिहासकार डॉ. बेनी प्रसाद ने अपने कार्य "जहांगीर का इतिहास" में लिखा है कि नूरजहाँ की भूमिका मुगल दरबार में एक गुट का नेतृत्व करने तक फैली हुई थी, जिसे उन्होंने "नूरजहाँ का जुंटा" की संज्ञा दी। जहाँगीर के शासन काल में, उसके पिता, इतिमादुद्दौला, और उसके भाई आसफ खान, पदवी में ऊपर उठे और मुगल दरबार में शक्तिशाली पदों पर आसीन हुए। समकालीन यूरोपीय पर्यवेक्षकों ने भी नूरजहाँ के गुट द्वारा दरबार में संचालित शक्ति को याद करते हुए, अपने संस्मरणों में एक जुंटा के अस्तित्व की अफवाहों को और हवा दी। इससे आकर्षित होकर बेनी प्रसाद ने तर्क दिया कि जहांगीर केवल नाममात्र का शासक था और नूरजहाँ के जुंटा ने राज्य के मामलों को नियंत्रित किया था। इसके कारण दरबार का गुटीकरण हो गया, जिसमें नूरजहाँ का गुट एक तरफ खड़ा था, जबकि शहजादे खुसरो अर्थात शाजहां के नेतृत्व में प्रतिद्वंदी गुट दूसरी तरफ खड़ा था।

नूरजहाँ के गुट के प्रभाव के बारे में सर थॉमस रो (जिसे सम्राट जेम्स प्रथम ने भेजा और जो जहाँगीर के दरबार में 1615 से 1618 तक रहा) ने लिखा है, “इस समय सारी शक्ति नूरजहाँ के गुट के हाथ में थी। उसके भाई आसफखां तथा उसी भाई (आसफ खां) के दामाद खुर्रम की सहायता के बिना कोई भी कार्य करवाना असम्भव था। उसका प्रभुत्व इतना बढ़ गया था कि महाबत खां जैसे प्रबल अमीर भी उससे भय खाते थे। जहाँगीर तो राज-काज को छोड़कर दिन-रात विलासता में डूबा रहता था।”

सर थॉमस रो ने लिखा है कि निश्चित रूप से नूरजहाँ और शहजादे खुर्रम के बीच एक प्रकार का गठबंधन था।

हालाँकि, नूरजहाँ और खुर्रम के बीच तनाव भी निश्चित रूप से स्पष्ट था, जैसा कि कंधार अभियान में देखा गया था, जो नूरजहाँ के नेतृत्व में था।

ऐसा कहा जाता है कि नूरजहाँ का प्रभावशाली व्यक्तित्व खुर्रम से टकरा गया था, जिसकी आँखें सिंहासन पर टिकी थीं और नूरजहाँ ऐसी संभावना से उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों को देख सकती थी क्योंकि इससे वह दरबार पर अपना नियंत्रण खो देती। इसलिए नूरजहां ने राजकुमार शहरयार का पक्ष लिया, जिससे उसने अपनी पहली शादी से हुई बेटी लाडली बेगम की शादी करवाई थी।

बेनी प्रसाद का तर्क है कि नूरजहाँ की साजिश से ही 1622 में खुर्रम का विद्रोह हुआ था जिसके बाद में जुंटा टूट गया था। इस अवधि में, नूरजहाँ ने कई हुकुम या शाही आदेश जारी किए, जैसा कि इन आदेशों पर उसकी मुहर की उपस्थिति से स्पष्ट होता है। दिलचस्प बात यह है कि मुहर दो प्रकार की थी, एक उसे रानी-पत्नी के रूप में संदर्भित करती थी, जबकि दूसरी उसे 'महारानी' कहती थी।

बेनी प्रसाद के कथन का आधुनिक इतिहासकारों ने कड़ी आलोचना की है और वह उनकी बातों में कुछ भी ठोस नहीं पाते हैं।

उदाहरण के लिए, जहांगीरनामा जैसे समकालीन स्रोत उल्लेख करते हैं कि सम्राट ने इतिमादुद्दौला और आसफ खान को शुद्ध रूप से योग्यता के आधार पर पदोन्नत किया था। नुरुल हसन ने बेनी के सिद्धांत को यह तर्क देते हुए नकारा कि इतिमादुद्दौला और उनके परिवार ने 1616 से ही के जब जहांगीर का ही शासन चल रहा था तभी से प्रमुखता हासिल करना शुरू किया था। इसके अतिरिक्त, अभिलेखों के एक

सर्वेक्षण से पता चलता है कि उनका एकमात्र महान परिवार नहीं था जिसकी पद्दोनती हुई थी। यहां तक कि महाबत खान जैसे रईस, जो नूरजहाँ और उसके कथित जुंटा के साथ अच्छे संबंध नहीं रखते थे, बादशाह से पक्ष लेने में कामयाब रहे। ऐसा प्रतीत नहीं बिल्कुल भी नहीं होता था कि नूरजहाँ के गुट के पास सत्ता का एकमात्र पासपोर्ट है।

सतीश चंद्र ने इस विचार के खिलाफ तर्क दिया कि नूरजहाँ और राजकुमार खुर्रम ने एक गठबंधन बनाया था। उन्होंने कहा कि न तो किसी समकालीन स्रोत ने ऐसा कोई गठबंधन दर्ज किया है और न ही दोनों के बीच हितों का संयोग था। नूरजहाँ अपने पति के सिंहासन की शक्ति को बनाए रखना चाहती थी, जबकि खुर्रम की आँखें सिंहासन पर टिकी हुई थीं। चंद्रा का कहना है कि यूरोपीय लोगों का रिकॉर्ड मुख्य रूप से दरबारी गपशप और सुनी-सुनाई बातों पर आधारित था। चन्द्र के अनुसार, खुर्रम का उदय मेवाड़ और दक्कन में अभियानों में उसकी सफलता के कारण हुआ। उन्हें 30,000 का अभूतपूर्व जट और सवार पद प्रदान किया गया और हिसार-फ़िरोज़ा की जागीर दी गई, जिसे युवराज के लिए आरक्षित कहा जाता है।

इरफ़ान हबीब ने भी, बेनी प्रसाद के दृष्टिकोण की आलोचना यह तर्क देते हुए किया कि हालांकि मुगल दरबार में महान गुटों के बीच बहुत साज़िश थी, यह सुझाव देने के लिए कोई सबूत नहीं है कि ये गुट नूरजहाँ के सहयोगी थे और जो इसके खिलाफ थे। उनकी व्याख्या यह थी कि नूरजहाँ के परिवार ने दरबार में फारसी (खुरासानी) तत्व का मूल गठन किया था, जो उस समय सबसे शक्तिशाली था। हालांकि, वह कहते हैं कि इसका मतलब यह नहीं था कि फ़ारसी कुलीन नूरजहाँ के आसपास रुके थे।

इसलिए, यह स्पष्ट है कि यद्यपि नूरजहाँ निश्चित रूप से दूसरों की तुलना में अधिक व्यावहारिक रानी थी, यह शायद ही निर्णायक है कि उसके नेतृत्व में एक समूह मौजूद था जो सिंहासन के पीछे वास्तविक शक्ति थी। उस काल में मुगलों की उपलब्धियों में कुछ श्रेय जहाँगीर को जाना चाहिए, और नूरजहाँ का व्यक्तित्व ऐसा था कि इसने इस तरह की अटकलों को जन्म दिया

आत्मा राम सनातन धर्म कॉलेज

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

राष्ट्रीय मूल्याङ्कन एवं प्रत्यायन परिषद् (NAAC) ग्रेड- 'ए'

राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (NAAC) 'सातवाँ स्थान'